डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/101/2020-22 वर्ष : 08 अंक : 21 मूल्यः 5 रुपए पृष्ठ : 8 R.N.I. No. RAJHIN/2014/56746

शिखर दृष्टि जीवन की... साप्ताहिक समाचार पत्र

हिलव्यू समाचार

शीर्षक सत्यापन पत्र संख्या RAJHIN16831/20/01/2013-TC

जयपुर >> रविवार, 21 नवम्बर, 2021

hillviewsamachar@gmail.com

गहलोत मंत्रिमंडल में 11 कैबिनेट और 4 नए राज्यमंत्री शपथ लेंगे

पायलट खेमे से 4 मंत्री, 3 राज्यमंत्री प्रमोट

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। गहलोत कैबिनेट में रविवार को बड़ा फेरबदल होगा। 11 कैबिनेट और 4 नए राज्यमंत्री शपथ लेंगे। 4 बजे राजभवन में शपथ ग्रहण समारोह होगा। इससे पहले गहलोत कैबिनेट के सभी मंत्रियों के इस्तीफे लिए गए, जिनमें से रघु शर्मा, हरीश चौधरी, गोविंद सिंह डोटासरा के इस्तीफे मंजूर किए गए। नए मंत्रियों के नाम तय हो गए हैं। विश्वेंद्र सिंह के अलावा पायलट खेमे से 4 मंत्री बने हैं। 3

राज्य मंत्रियों को प्रमोट कर कैबिनेट मंत्री बनाया है। गहलोत कैबिनेट में अब 29 मंत्री हो गए हैं, अब सीएम सहित 30 का कोटा पूरा हो गया है, एक भी जगह खाली नहीं है।

11 कैबिनेट मंत्री : हेमाराम चौधरी, महेंद्रजीत सिंह मालवीय, रामलाल जाट, महेश जोशी, विश्वेंद्र सिंह, रमेश मीणा, ममता भूपेश, भजनलाल जाटव, टीकाराम जूली, गोविंद मेघवाल, शकुंतला रावत।

4 राज्यमंत्री: जाहिदा, बृजेंद्र ओला, राजेंद्र गुढा और मुरारीलाल मीणा।

संगठन में पद वाले केवल तीन मंत्रियों को ही ड्रॉप किया है। रविवार को शाम 4 बजे शपथ ग्रहण समारोह होगा। रविवार दोपहर 2 बजे सभी मंत्रियों को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर बुलाया है, वहां से सभी राजभवन जाएंगे। मंत्री बनने वाले नए विधायकों को शनिवार रात ही फोन करके सूचना दे दी है। शनिवार शाम को सीएम निवास पर हुई मंत्रिपरिषद की बैठक में सभी मंत्रियों से इस्तीफे लिए गए। जिन मंत्रियों को हटाया है, केवल उन्हीं 3 के इस्तीफे स्वीकार किए गए है।

मंत्रियों के विभागों में भारी फेरबदल होना तय माना जा रहा है। कुछ मंत्रियों को छोड़ ज्यादातर के विभाग बदले जाएंगे। मंत्रियों के विभाग भी कांग्रेस हाईकमान के स्तर पर ही तय होकर आए हैं, जिनके बारे में फैसला शपथ ग्रहण समारोह के बाद होगा।

राजस्थान में तीन महीने बढ़कर आएगा बिजली बिल

जनवरी से मार्च तक के यूनिट पर लगेगा 33 पैसा फ्यूल सरचार्ज, अगले 3 महीने में होगी वसूली

जयपुर। राजस्थान में उपभोक्ताओं का अगले तीन महीने तक बिजली का बिल बढ़कर आएगा। तीनों डिस्कॉम जयपुर, जोधपुर और अजमेर ने 33 पैसे यूनिट के हिसाब से बिजली उपभोक्ताओं पर फ्यूल सरचार्ज लगा दिया है। यह फ्यूल सरचार्ज अप्रैल 2021 से जून 2021 के लिए 33 पैसे प्रति यूनिट के हिसाब से लगाया गया है। इसकी रिकवरी जनवरी, फरवरी और मार्च 2021 के बिजली बिलों की रीडिंग के आधार पर होगी। खास बात यह है कि यह फ्यूल सरचार्ज सभी कैटेगरी के उपभोक्ताओं पर रहेगा। डिस्कॉम पहले बकाया सरचार्ज की अगले 3 महीने तक वसूली करेगी। यह हर महीने बिल में जुड़कर आएगा। ऐसे में 550 करोड़ रुपए सरचार्ज के नाम पर उपभोक्ताओं से वसूले जाएंगे। इसकी वसूली अगले तीन महीने में होगी।

ऐसे समझे फ्यूल सरचार्ज का गणित, 350 तक ज्यादा आएगा बिल: यदि किसी उपभोक्ता के 1 महीने का बिजली बिल 350 यूनिट आता है, तो आगामी बिल में 3 महीने तक कन्ज्यूम हुई बिजली पर फ्यूल सरचार्ज देना होगा। यह सरचार्ज जनवरी, फरवरी और मार्च 2021 में खर्च हुई यूनिट पर 33 पैसे प्रति यूनिट लगेगा। ऐसे में सामान्य तौर पर इन तीन महीने का फ्यूल सरचार्ज 346.50 रुपए होगा। इससे ज्यादा यूनिट खर्च होने पर उसी अनुपात में यह सरचार्ज जुड़ता जाएगा। डिस्कॉम यह चार्ज उपभोक्ता से अगले तीन महीने तक इंस्टॉलमेंट में वसूल करेगा।

अकेले जयपुर में 250 करोड़ की वसूली: प्रदेशभर से इस तरह करीब 550 करोड़ की वसूली होगी। अनुमान के मुताबिक, अकेले जयपुर डिस्कॉम ही करीब 250 करोड़ रुपए से ज्यादा की वसूली करेगा।

64 पुलिस इंस्पेक्टर बने डीएसपी

राज्य सरकार ने दिया 64 इंस्पेक्टरों को प्रमोशन, गृह विभाग ने जारी किया आदेश

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान सरकार ने 64 पुलिस इंस्पेक्टरों को प्रमोशन कर पुलिस उपाधीक्षक (DSP) बनाया है। अब ये सभी अफसर राजस्थान पुलिस सेवा (RPS) में शामिल हो गए है। प्रदेश के गृह विभाग ने गुरुवार को पदोन्नति सूची जारी की। पदोन्नत पुलिस इंस्पेक्टरों में लक्ष्मणलाल, अमर सिंह, प्रहलाद राय, पिंटू कुमार, महेंद्र कुमार, देशराज कुलदीप, रमेशचंद माचरा, गौतम कुमार जैन, सुघड़ सिंह, अनुज शुभम, नियाज मोहम्मद खान, हरिसिंह धायल, गोपाल सिंह ढाका, किशन सिंह, दिनेश चंद सुखवाल, मुकेश आचार्य है।

इसी तरह, सुरेंद्र सिंह राणावत, बंशी लाल पंडार, हरजीलाल यादव, जितेंद्र सिंह, मुकेश चौधरी, भवानी सिंह शेखावत, हजारीलाल खटाना, भंवरलाल चौधरी, मुकेश चौधरी, अमीर हसन, चंद्रशेखर, दशरथ सिंह, राजेश यादव, रामावतार जाट, खेमाराम बिजारणियां, हर्षराज सिंह, रामसिंह

जाट, विनोद कुमार शर्मा, विवेक सिंह राव, राकेश कुमार वर्मा, विवेक सिंह राव, राकेश कुमार वर्मा को डीएसपी बनाया है।

नरेंद्र कुमार पारीक, अशोक कुमार आंजना, रामावतार सिंह ताखर, शिवप्रकाश हरगन, हरजीराम चौधरी, मदनलाल विश्नोई, रामानंद यादव, राजेंद्र कुमार रावत, जयसिंह, चांदमल सिंगारिया, नानालाल सालवी, सुनील कुमार जाखड़, जोगेंद्र सिंह राजावत, अजीतपाल, सिंह, सुरेश कुमार डूडी, इंसार अली, राजेश कुमार टेलर, अरविंद कुमार जांगिड़, बीना सिंह, श्रीराम बड़सरा, आशीष कुमार भार्गव, विकास कुमार, हरिराम सोनी, समशेर खान, सुरेंद्र कुमार, संग्राम सिंह, किशन सिंह और अशोक कुमार है।

विद्याधर नगर में हुआ महिला मिनी मैराथन का शानदार आयोजन

विमेंस रन फ़ॉर नेशन में उत्साह के साथ में दौड़ी सैकड़ों छात्राएं और महिलाएं

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी की जयंती के अवसर पर 19 नवंबर 2021 को विद्याधर नगर में प्रियदर्शनी सोलर मिशन एंड वाटर सेविंग संस्था की ओर से विमेंस रन फॉर नेशन का आयोजन किया गया। इस विमेंस रन फॉर नेशन में विभिन्न स्कूल कॉलेज की 800 से ज्यादा छात्रों सहित विभिन्न महिला संगठन की कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। संस्था अध्यक्ष शशि गुप्ता ने बताया कि हर वर्ष इंदिरा गांधी जी की जयंती के अवसर पर यह निमंत्रण आयोजित की जाती है।इसका उद्देश्य है कि महिलाओं के सशक्तिकरण पर सरकार और मीडिया का ध्यान जाए साथ ही महिलाओं को भी अपनी ताकत का एहसास हो और वह भी आयरन लेडी बन सके। विमेंस रन फॉर नेशन को अंबाबाड़ी से हरी झंडी दिखाकर संस्था अध्यक्ष शशि गुप्ता, पूर्व महापौर ज्योति खंडेलवाल और बियानी कॉलेज के निदेशक

संजय बियानी ने रवाना किया। विमेन रन फॉर नेशन बियानी कॉलेज सेंट्रल स्पाइन होते हुए विद्याधर नगर स्टेडियम के सामने समाप्त हुई। यहां पर सभी प्रतिभागियों को कांग्रेस विधायक इंद्राज गुर्जर पूर्व महापौर ज्योति खंडेलवाल संस्था की कार्यकारी अध्यक्ष प्रियंका गोयल,पार्षद रेखा कूलवाल और संस्था सदस्यों ने मेडल और प्रमाण पत्र वितरित किए। सभी प्रतिभागियों को संस्था की ओर से टी-शर्ट भी वितरित की गई।

कोविड संक्रमण की रोकथाम के लिए फाइव फोल्ड स्ट्रेटजी की पालना के निर्देश

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। प्रदेश सरकार की ओर से कोरोना की रोकथाम के लिए किए गए व्यापक प्रयासों ने देश भर में प्रशंसा हासिल की थी। कई माह तक कोरोना मामलों की संख्या बहुत कम रहने के बाद एक बार पुनः इन मामलों की संख्या में बढ़ोतरी देखी जा रही है। कोरोना संक्रमण बढ़े नहीं इसके लिए चिकित्सा विभाग की ओर से विशेष सतर्कता और कोरोना गाइडलाइन की सख्ती से पालना के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया है।

चिकित्सा विभाग के शासन सचिव वैभव गालरिया ने बताया कि बीते त्यौहारी सीजन और वर्तमान में जारी शादी सीजन के दौरान कोरोना नियमों की काफी अनदेखी की जा रही है। नतीजतन कोरोना संक्रमितों की संख्या बढ़ी है। लेकिन इसका फैलाव अधिक ना हो इसके लिए फाइव फोल्ड स्ट्रेटजी के पालन को सुनिश्चित करने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए गए है। उन्होंने कहा कि इस स्ट्रेटजी में टेस्ट, ट्रैक, ट्रीट, वैक्सीनेट और बिहेवियर सम्मलित है।

सचिव ने कहा कि जिलों में कोविड जांच की संख्या में वृद्धि और संक्रमित मरीज के संपर्क में आए व्यक्तियों की तुरंत जांच के लिए अधिकारियों से कहा गया है। जिससे कि संक्रमण को बढ़ने से तुरंत रोका जा सके। उन्होंने कहा कि अधिकारियों को निर्देश दिए गए है कि संक्रमित मरीज के क्षेत्र में सघन एक्टिव व पेसिव सर्वेलेंस की कार्रवाई की जाए। उन्होंने एडवायजरी जारी करते हुए निर्देश दिए कि कोविड वैक्सीन की प्रथम डोज के साथ दूसरी डोज नहीं लेने वाले पात्र व्यक्तियों को चिन्हित कर टीकाकरण पूर्ण कराया जाए।

करप्शन को लेकर फिर बोले सीएम गहलोतः

जो लोग पकड़े जा रहे हैं वे शिक्षा विभाग के तो हैं नहीं, वह बात टीचर्स को लेकर नहीं थी

हिलव्यू समाचार

दौसा। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत बुधवार को दौसा विधानसभा क्षेत्र के बोरोदा गांव के दौरे पर रहे। यहां से लौटते वक्त सीएम ने बीते दिनों जयपुर में एक कार्यक्रम में दिए गए बयान को लेकर पत्रकारों से कहा कि हिंदुस्तान में सबसे अच्छा काम राजस्थान की एसीबी कर रही है। जो लोग पकड़े जा रहे हैं वह शिक्षा विभाग के तो हैं नहीं, ऐसे में वह बात टीचर्स को लेकर नहीं थी। उन्होंने कहा कि सरकार की मंशा है कि भ्रष्टाचार कैसे रुके। पिछले दिनों कलेक्टर-एसपी जैसे बड़े-बड़े अधिकारी भी पकड़े गए हैं, सस्पेंड तक हुए हैं। ऐसा आपको सिर्फ राजस्थान में ही मिलेगा। शिक्षा विभाग की तो मैंने सिर्फ इसलिए कहा था कि वे भी बेचारे तकलीफ पाते हैं। ट्रांसफर-पोस्टिंग के लिए पैसे देने की कोशिश की जाती है, यह नौबत इसलिए आती है कि ट्रांसफर पॉलिसी नहीं है। ऐसे में यदि पॉलिसी बन जाए तो ना टीचर्स को पैसा देना पड़ेगा और ना ही करप्शन होगा।

मेरे मंत्रालयों के भी कई लोग पकड़े गए: सीएम ने कहा कि मेरे पास भी जो मंत्रालय हैं उनके भी कई अधिकारी पकड़े गए हैं, लेकिन यह बात फैलाई गई है कि शिक्षा विभाग में भ्रष्टाचार है यह बात गलत है। उस दिन यही बात कहना मेरा मकसद था। बाकी जो लोग पकड़े जा रहे हैं वह तो दूसरे डिपार्टमेंट के हैं।

विधायकों की सरकार से कोई शिकायत नहीं: विधायकों में भेदभाव की बात को लेकर पूछे गए सवाल पर सीएम ने कहा कि हम सभी 115 विधायकों से प्रभारी अजय माकन ने वन-टू-वन बात की थी। प्रदेश प्रभारी को सभी विधायकों ने कहा था कि काम के मामले में सरकार से हमारी कोई शिकायत नहीं है। विधायकों ने जितने काम मांगे थे सबको कुछ ना कुछ जरूर दिया गया है। कांग्रेस में किसी प्रकार की कोई गुटबाजी नहीं है, लेकिन बीजेपी वाले अफवाह फैला रहे हैं।

नेशनल न्यूज़ बनी थी BJP की हार: सीएम ने कहा कि बीजेपी वाले जो अफवाह फैला रहे हैं। उनके प्रत्याशियों की चुनाव में जमानत जब्त हो गई। उनके प्रत्याशी कोई तीसरे तो कोई चौथे नंबर पर रहा है। यह ऑल इंडिया न्यूज़ बनी है। गुटबाजी को लेकर सीएम ने कहा झगड़ा तो बीजेपी वालों के यहां है, कांग्रेस पार्टी में कोई झगड़ा नहीं है। हम सब एकजुट हैं आने वाले टाइम में आपको खुद को महसूस हो जाएगा।

पांच दिवसीय राष्ट्रीय नाट्यशास्त्र कार्यशाला 13 से 17 दिसंबर 2021 तक जोधपुर में, कार्यशाला का पोस्टर जारी किया

कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान संस्कृत अकादमी और राजस्थान संगीत नाटक अकादमी का संयुक्त आयोजन

हिलव्यू समाचार

जयपुर। आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान संस्कृत अकादमी और राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में 13 से 17 दिसंबर, 2021 तक जोधपुर में ऑन लाइन एवं ऑफलाइन आयोजित होने वाली पांच दिवसीय राष्ट्रीय नाट्य शास्त्र कार्यशाला का पोस्टर पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की जयंती की पूर्व संध्या पर कला एवं संस्कृति मंत्री,डॉ बी.डी़ कल्ला और विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने जारी किया।

राष्ट्रीय नाट्य शास्त्र कार्यशाला की संक्षिप्त जानकारी देते हुए संभागीय आयुक्त एवं प्रशासक, राजस्थान संस्कृत अकादमी दिनेश कुमार यादव ने बताया कि नाट्यशास्त्र पर राज्य में इस तरह की यह पहली कार्यशाला होगी। इस कार्यशाला के अंतर्गत नाटक, रंगमंच, संगीत, सौंदर्यशास्त्र साहित्यिक सिद्धांत और प्रदर्शन कला के समस्त पक्षों पर विषय विज्ञों द्वारा व्याख्यान दिए जायेंगे। विश्व विख्यात संस्कृत एवं नाट्य मनीषी प्रोफेसर राधा बल्लभ त्रिपाठी, भोपाल कार्यशाला के पाठ्यक्रम निदेशक होंगे । यादव ने बताया कि कार्यशाला में भारत एवं भारत के बाहर अन्य देशों से शोधार्थी, प्राध्यापक, साहित्यकार एवं रंगकर्मी ऑनलाइन पंजीकरण के बाद जुड़ सकेंगे।

राजस्थान विवि और प्रतिभा एजुकेशनल डेवलपमेंट रिसर्च सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में हो रहा समारोह

5 दिवसीय जयपुर कला महोत्सव का आगाज़

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। कला के विविध रूपों और शैलियों को एक मंच पर साकार करने के लिए गुरुवार को जयपुर कला महोत्सव की शुरुआत हुई। यह कला महोत्सव जवाहर कला केंद्र के शिल्पग्राम में, 22 नवम्बर तक चलेगा। कला को जीवंत बनाए रखने की दिशा में राजस्थान सहित देश के अनेक प्रांतों के कलाकार यहां अपना हुनर दिखाने लिए मौजूद हैं। दृश्यकला की यथार्थवादी, समकालीन और आधुनिक चित्रकला एवं मूर्तिकला के नामी वरिष्ठ और युवा कलाकारों की कला के एक से बढ़कर एक नमूनों के साथ टेक्सटाईल, फोटोग्राफी, पेपेरमैशी, ज्यूलरी, मैटल क्राफ्ट, आर्किटैक्चर, वुड क्राफ्ट और इंस्टालेशन कलाएं, कलाप्रेमियों का ध्यान आकर्षित कर रही हैं।

महोत्सव के मुख्य समन्वयक राकेश गुप्ता ने बताया कि इस बार ये समारोह राजस्थान विश्वविद्यालय के फाइन आर्ट डिपार्टमेंट और जयपुर में बरसों से कार्य कर रही प्रतिभा एजुकेशनल डेवलपमेंट रिसर्च सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। जयपुर कला महोत्सव का, यह पांचवां संस्करण है।

राजस्थान विश्वविद्यालय के फाइन आर्ट विभाग के प्रमुख रजत पण्डेल ने बताया कि मेले की व्यापकता और सार्थकता को देखते हुए इस बार राजस्थान यूनिवर्सिटी ने भी इसमें सहभागिता करने का निर्णय किया है। इस महोत्सव में यूनिवर्सिटी के फाइन आर्ट डिपार्टमेंट के स्टूडेंटी को भी यहां अपनी कला का प्रदर्शन करने के लिए मोटिवेट कर रहे हैं ताकि यहां आने वाले लोग देश के नामी कलाकारों की कृतियों के साथ हमारी युवा पीढ़ी की कलात्मक अभिव्यक्ति के हुनर का भी आनन्द उठा सकें। कला महोत्सव में 100 से अधिक स्टॉल लगाई गई हैं। जिसमें 232 कलाकारों, 8 आर्ट इंस्टीट्यूशंस की कलाकृतियां हैं। जयपुर की कलाकार महिमा बिस्सा, प्रियांशी पारीक और वर्षिता तनवानी की कलाकृतियां यहां आए कलकारों का सहसा ही ध्यान खींचती है। महोत्सव के दौरान शुक्रवार को सुबह 11 से दोपहर 1.00 बजे के बीच चाइल्ड आर्ट कॉम्पटीशन, लाइव पोर्ट्रे पेन्टिंग, ग्रीटिंग कार्ड मेकिंग और फेस पेन्टिंग कॉम्पटीशन के आयोजन किए जाएंगे। इसके अलावा सुबह 10 से रात्रि 8 बजे तक यहां लगी स्टाल्स पर देश के नामी वरिष्ठ और युवा कलाकारों की कला का आनन्द लिया जा सकता है। परिसर में प्रवेश पूरी तरह निःशुल्क रखा गया है एवं कोरोना के सभी नियमों के पालन के लिए लोगों को पाबन्द किया जा रहा है।

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

02

जयपुर >> रविवार, 21 नवम्बर, 2021

संपादकीय

विकास का जरिया बन सकती हैं नदियां, रिवरफ्रंट विकास के दोनों मॉडल पर करना चाहिए विचार

अहमदाबाद में साबरमती रिवरफ्रंट की सफलता को देखकर अक्सर कहा जाता है कि दिल्ली और अन्य शहरों में यमुना किनारे भी ऐसा किया जाए। निस्संदेह साबरमती रिवरफ्रंट से अहमदाबाद का विकास हुआ है। वहां साप्ताहिक हाट की व्यवस्था की गई है। विस्थापितों को अन्यत्र बसाया गया है। साबरमती के पाट की चौड़ाई पहले 382 मीटर थी जो रिवरफ्रंट बनने के बाद 275 मीटर रह गई है। पाट के सिकुड़ने से बची भूमि के 80 प्रतिशत हिस्से को खुला रखा गया है। उसमें कुछ जगह पर पौधारोपण हुआ है। खास बात यह है कि साबरमती पानी से लबालब भरी रहती है। इससे नयन सुख मिलने के साथ-साथ भूमिगत जल का पुनर्भरण होता है। उधर पिछले कुछ अर्से से रिवरफ्रंट विकास का दूसरा माडल भी लागू किया जा रहा है। इसमें नदी के पाट पर हुए अतिक्रमण को ध्वस्त कर पाट को और चौड़ा किया जाता है। कई देशों में सरकार ने भूमि अधिग्रहीत कर नदी को वापस लौटाई है। चौड़े किए गए पाट में पौधारोपण आदि करके नदी को वापस अपने प्राकृतिक रूप में बहने का अवसर दिया है।

नदी के पाट को संकुचित करने से हमें भूमि मिलती है। उस पर भवन निर्माण करके हम आर्थिक विकास करते हैं। दूसरे माडल में हम नदी के पाट को फैलाकर उसमें हरियाली बढ़ाते हैं। इससे पाट से लगी भूमि की कीमत बहुत बढ़ जाती है। जैसे पार्क के सामने का मकान गली के अंदर के मकान से महंगा मिलता है। पाट के बाहर की भूमि की कीमत बढ़ने से जो आर्थिक विकास होता है, वह माडल भारत जैसे देश के लिए विशेष उपयोगी है, क्योंकि हमारे आर्थिक विकास में सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी बढ़ती जा रही है। सेवा क्षेत्र से जुड़े उद्यमों के लिए हरियाली और प्राकृतिक रूप में बहती नदी के करीब दफ्तर बनाना अधिक लाभप्रद है। बिल्कुल वैसे जैसे पोषक तत्वों से भरपूर भोजन कम मात्र में भी मिले तो वह पर्याप्त होता है।

अपने देश में नदियों को मां कहा जाता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गंगा किनारे स्थित वाराणसी को विश्व की आध्यात्मिक राजधानी बनाने की बात कही थी। गंगा की भांति यमुना के प्रति भी देशवासियों की श्रद्धा है। इसीलिए दोनों नदियों के संगम स्थल प्रयागराज को तीर्थराज भी कहा जाता है। प्रयागराज में जिस यमुना का गंगा में मिलन होता है, वह इन दिनों अपनी गंदगी को लेकर चर्चा में है। छठ के अवसर पर वह दिल्ली में इतनी प्रदूषित हो गई, मानों उसमें जहर घुला हो। प्रदूषण के कारण उससे झाग निकलने लगे। यमुना का पानी यमुनोत्री से चलता है, तो वहां से नीचे आता है, लेकिन हरियाणा के यमुनानगर स्थित हथिनीकुंड बैराज पर यमुना का लगभग पूरा पानी निकाल लिया जाता है। पानीपत और सोनीपत के पास यमुना अमूमन पूरी तरह सूख जाती है। यमुना को पुनर्जीवित करने के लिए पर्याप्त मात्र में पानी हथिनीकुंड से छोड़ना होगा।

सरकार को आकलन करना चाहिए कि यमुनोत्री से निकले पानी से खेती करने में कितना आर्थिक विकास होता है और उसी पानी से दिल्ली में यमुना किनारे साफ्टवेयर पार्क, बैंक और अस्पताल आदि बनाकर कितना अतिरिक्त लाभ होगा। मेरा आकलन है कि यमुनोत्री के पानी में निहित ऊर्जा से यदि हरियाणा के किसान को 100 रुपये का लाभ होता है, तो दिल्ली के साफ्टवेयर पार्क को एक लाख रुपये का लाभ हो सकता है। दिल्ली द्वारा हरियाणा को पानी छोड़ने के लिए पर्याप्त मुआवजा दिया जा सकता है। तब हथिनीकुंड से पानी छोड़ना दिल्ली और हरियाणा, दोनों के लिए लाभप्रद हो जाएगा। यह समस्या साबरमती माडल में हल नहीं हो रही है। अहमदाबाद के ऊपर एक बांध से साबरमती का पूरा पानी निकाल लिया जाता है। फिर उसमें नर्मदा का पानी प्रवाहित किया जाता है। अहमदाबाद के नीचे दूसरा बांध बनाकर उस पानी को बहकर समुद्र में जाने से रोक लिया जाता है। वस्तुत- साबरमती रिवरफ्रंट एक प्रकार से रुके हुए पानी का 10 किलोमीटर लंबा तालाब है। नर्मदा की शक्ति का भी उसमें उपलब्ध होना संदिग्ध है, क्योंकि वह पानी एक लंबी यात्रा और तमाम व्यवधानों को पार करते हुए अहमदाबाद तक पहुंचता है।

इस बीच एक बड़ा सवाल यही है कि रिवरफ्रंट के माध्यम से हम आखिर किन मानवीय जरूरतों को पूरा करना चाहते हैं? मनोविज्ञानी एब्रहाम मासलो के अनुसार मनुष्य की आवश्यकताओं की सात श्रेणियां हैं। इनमें मनुष्य क्रमश- नीचे से ऊपर उठता है। ये श्रेणियां हैं भौतिक, सुरक्षा, आत्मीयता, स्वाभिमान, ज्ञान, सौंदर्य और आत्मज्ञान। जब हम नदी को कंक्रीट में बांधकर उसके पाट पर मकान बनाते हैं तो उनसे भौतिक एवं सुरक्षा की निचली इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। इसके विपरीत यदि हम नदी के पाट का विस्तार कर उसे वनस्पतियों और प्राणियों से आबाद करते हैं तो हम अपनी ज्ञान एवं सौंदर्य संबंधी उच्च अभिलाषाओं की पूर्ति करते हैं। ऐसी स्थिति में दिल्लीवासी भी यमुना के शुद्ध जल से आचमन और स्नान करके आनंदित होने के साथ ही स्वास्थ्य लाभ भी उठा पाएंगे। कुछ आकलनों के अनुसार दिल्ली पर बाढ़ का भारी खतरा मंडरा रहा है, क्योंकि हिमालयी क्षेत्र में होने वाली भारी वर्षा कभी भी दिल्ली के लिए खतरे का सबब बन सकती है। ऐसी स्थिति में यमुना अगर कंक्रीट की दीवारों के बीच बहेगी तो उसकी बाढ़ के पानी को ले जाने की क्षमता न्यून रह जाएगी। सामान्य रूप से नदी का पाट अंग्रेजी के 'वी' अक्षर के आकार का होता है। पानी की मात्रा बढ़ने से नदी को फैलकर बहने का अवसर मिलता है। इससे पानी का स्तर बहुत ज्यादा नहीं बढ़ता।

शाहरुख़ की बेटे पर कड़ी नज़र

बदल दिया बॉडीगार्ड

मुंबई क्रूज ड्रग केस ने शाहरुख खान एंड फैमिली को झकझोर कर रख दिया है. अभी भी उनके घर में सब कुछ ठीक नहीं है. जेल से लौटने के बाद आर्यन खान गहरे सदमे में हैं. पूरे मामले से आर्यन इतना परेशान हैं कि अपने दोस्तों से भी नहीं मिल रहे हैं. इन सबके कारण गौरी और शाहरुख अपने लाडले को लेकर और भी सजग हो गए हैं. शाहरुख ने अपने अपकमिंग प्रोजेक्ट्स से कुछ दिन का रेस्ट लिया है और अपने बेटे के साथ समय बिता रहे हैं.

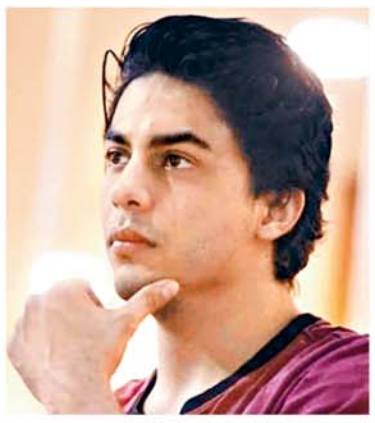

वह नवंबर के आखिरी हफ्ते में काम पर लौटेंगे लेकिन इस बीच शाहरुख को बेटे की इतनी चिंता सता रही है कि उन्होंने अपने बॉडीगार्ड रवि सिंह को आर्यन की देखरेख के लिए रख दिया है और खुद के लिए एक नया बॉडीगार्ड खोज रहे हैं. आर्यन किसी नए शख्स के साथ कम्फर्टेबल नहीं हो सकता. वो रवि सिंह को कई साल से जानता है और दोनों के बीच अच्छा रिश्ता है. इसलिए पापा शाहरुख ने बेटे के लिए नया बॉडीगार्ड रखने का अपना प्लान बदल दिया और खुद के बॉडीगार्ड को आर्यन की तरफ शिफ्ट किया. वो खुद के लिए नया बॉडीगार्ड रखने वाले हैं. शाहरुख सोचते हैं कि किसी विश्वस्त शख्स को ही आर्यन का ध्यान रखने के लिए छोड़ना चाहिए.

कैटरीना कैफ के साथ जल्द ही सात फेरे लेने जा रहे 'उरी द जोश' एक्टर विक्की कौशल ने सिड यानी सिद्धार्थ मल्होत्रा की गर्लफ्रेंड कियारा आडवानी को उनसे चुरा लिया है. लेकिन रीयल लाइफ में नहीं, बल्कि रील लाइफ में.

विक्की ने चुराई सिड की गर्लफ्रेंड

विक्की अपनी अपकमिंग फिल्म 'गोविंदा नाम मेरा' में कियारा संग प्यार की पींगें बढ़ाते दिखाई देंगे. साथ ही वो भूमि पेडनेकर के साथ भी इश्क लड़ाएंगे. यह एक मल्टी स्टारर फिल्म है. फिल्म का प्रोडक्शन वायाकॉम 18 और करन जौहर कर रहे हैं. फिल्म में विक्की के किरदार का नाम गोविंदा वाघमारे है. फिल्म में कियारा उनकी गर्लफ्रेंड बनी हैं तो वहीं भूमि उनकी वाइफ का रोल करती नजर आएंगी. वैसे इन दिनों विक्की कैट के साथ अपनी शादी को लेकर खासे चर्चा में हैं. दोनों की शादी के लिए एक शानदार लोकेशन चुनी गई है. यह जोड़ी सवाई माधोपुर (राजस्थान) स्थित सिक्स सेंस फोर्ट में शादी करने जा रही है. दोनों की शादी की पूरी तैयारियां हो चुकी हैं.

सैफ की दो टूक

घर बैठा रहा तो और बच्चे हो जाएंगे

बॉलीवुड के छोटे नवाब सैफ अली खान का कहना है कि वो लगातार काम कर रहे हैं. ऐसा इसलिए कि कहीं खाली-पीली घर पर बैठे रहेंगे तो और बच्चे हो जाएंगे व परिवार बढ़ता ही जाएगा. वैसे सैफ अक्सर अपनी दो टूक सुनाकर अगले वाले की बोलती बंद कर देते हैं. इससे पहले वह कह चुके हैं कि मैं तो सिर्फ नाम का नवाब हूं, सारा पैसा तो शर्मिला टैगोर ले लेती हैं.

अब एक बार फिर सैफ ने कुछ सवालों के ऐसे मजेदार जवाब दिए कि उन्होंने हर किसी को हंसने पर मजबूर कर दिया. इन दिनों सैफ के पास फिल्मों की कतार लगी हुई है. इसके पहले भी उनकी फिल्में लगातार रिलीज हुईं. सैफ से पूछा गया कि 'बंटी और बबली2' इस साल में उनका तीसरा प्रोजेक्ट है. पहले 'तांडव' किया, फिर 'भूत पुलिस'. लगातार काम कर रहे हैं. आप वर्कोहॉलिक हैं या फिर आप पर फैमिली बढ़ जाने का प्रेशर है तो इस पर सैफ ने कहा, फैमिली बढ़ जाने का प्रेशर नहीं है. मुझे इस बात का डर है कि अगर मैं घर बैठा रहूं तो और बच्चे हो जाएंगे.

अब हसाऐंगी विद्या

इलियाना, प्रतीक होंगे साथ

बॉलीवुड में लीक से हटकर फिल्में कर चुकी एक्ट्रेस विद्या बालन अब दर्शकों को हंसाने आ रही हैं. उनके साथ एक्ट्रेस इलियाना डिक्रूज और 'स्कैम' फेम प्रतीक गांधी भी लीड स्टार कास्ट में दिखाई देंगे. इस फिल्म में पहली बार विद्या और इलियाना स्क्रीन शेयर करती नजर आएंगी. साथ ही सेंथिल राममूर्ति के नाम की भी चर्चा है.

फिल्म का निर्देशन ऐड फिल्ममेकर शीर्षा गुहा ठाकुरता करने जा रही हैं. इसकी शूटिंग मुंबई और ऊटी के खूबसूरत लोकेशन पर हो रही है. विद्या और इलियाना ने अपने इंस्टाग्राम पर इस फिल्म को लेकर पोस्ट भी किया है.

विद्या ने अपने अन्य को-स्टार्स के साथ इस तस्वीर को शेयर करते हुए लिखा है कि यह मॉडर्न रिलेशनशिप को लेकर एक चार्मिंग कॉमेडी ड्रामा फिल्म है. या तो यह आपकी अपनी कहानी है या फिर आपके फ्रेंड की. यह फिल्म आपको जितना हंसाएगी, उतना ही इमोशनल भी करेगी. विद्या ने कहा कि मैं इस फिल्म में अपने काव्या के किरदार को काफी इंजॉय कर रही हूं. जब मैंने पहली बार यह कहानी सुनी तो मैं काफी इम्प्रेस थी.

सलमान की उम्मीद नहीं तोड़ेंगी महिमा

एक्ट्रेस महिमा मकवाना जल्द ही सलमान खान की फिल्म 'अंतिम : द फाइनल ट्रूथ' से अपना बॉलीवुड डेब्यू करने जा रही हैं. महिमा किसी भी तरह सलमान की उम्मीदों पर खरी उतरना चाहती हैं, जिसके लिए उन्होंने बहुत मेहनत की है. इस फिल्म के रिप्पांस के बाद वे अपने करिअर का अगला मोड़ तय करेंगी.

महिमा ने बताया कि सलमान के साथ मैंने सबसे पहले 'बिग बॉस' के सेट पर स्क्रीन शेयर किया था. उस वक्त मैं अपने एक टीवी शो को प्रमोट करने गई थी. उस दिन से मैं यही सपना देखती थी कि कभी आगे चलकर सलमान के साथ और भी काम करने का मौका मिले और एक साल बाद मेरा ये सपना पूरा हुआ. उन्होंने फिल्म के लिए मेरा नाम सजेस्ट किया, जो मेरे लिए बहुत बड़ी बात है. उन्हें मुझसे बहुत उम्मीदें हैं और मैं हर हाल में उनकी उम्मीदों पर खरी उतरना चाहती हूं.

महिमा ने कहा, सलमान के साथ फिल्म में मेरे कुछ ही सीन्स हैं. लेकिन, एक बात जो उन्होंने मुझे हर बार कही थी, वो ये है कि आपको इस सेट पर सबसे ज्यादा मेहनती इंसान बनना होगा. साथ ही उन्होंने मुझे अपनी जड़ को कभी नहीं भूलने की एडवाइस भी दी थी. हर बार बस यही कहते थे कि चाहे तुम कितनी भी आगे क्यों नहीं बढ़ जाओ, अपनी सफलता को अपने ऊपर हावी मत होने देना.

दिगांगना के दिल में कैद हुए भव्य

TV मैजिक

टीवी शो 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' में टप्पू का रोल करते हुए गुजराती फिल्मों की ओर अपना रुख करने वाले एक्टर भव्य गांधी एक्ट्रेस दिगांगना सूर्यवंशी के प्यार में कैद हो गए हैं, जिसके बाद एक बार फिर भव्य के लव लाइफ की चर्चा होने लगी है. इससे पहले भव्य का नाम 'तारक मेहता...' में सोनू का किरदार निभाने वाली एक्ट्रेस निधि भानुशाली से जुड़ चुका है. दोनों एक-दूसरे को डेट कर रहे थे लेकिन भव्य ने निधि को बेस्ट फ्रेंड बताया.

अब भव्य का नाम दिगांगना से जुड़ा है. दोनों की पहली मुलाकात एक अवार्ड नाइट के वक्त हुई और वहीं से दोनों की दोस्ती शुरू हुई. उसके बाद से दोनों को कई मौकों पर साथ देखा गया है. दिगांगना ने अपने एक्टिंग करिअर की शुरुआत एक चाइल्ड आर्टिस्ट के तौर पर 2002 में की थी. उस वक्त वह 7 साल की थीं और टीवी शो 'क्या हादसा क्या हकीकत' में नजर आई थीं, लेकिन उन्हें बड़ा ब्रेक 'एक वीर की अरदास वीरा' टीवी शो से मिला. वह 2015 में 'बिग बॉस 9' में नजर आ चुकी हैं. दिगांगना ने 'जलेबी' और 'फ्राइडे' जैसी हिंदी फिल्में कीं और 'रंगीला राजा' में एक्टर गोविंदा की लीड हीरोइन भी बनीं. वह फिलहाल फिल्म 'द बैटल ऑफ भीमा कोरेगांव' की शूटिंग कर रही हैं, जिसमें वह अर्जुन रामपाल के अपोजिट नजर आएंगी.

डायबिटीज रोगी बेफ़िक्र खा सकते हैं ये 5 चीजें, ब्लड शुगर लेवल बढ़ने की न करें चिंता

Diabetes And Carb Cravings: यह अक्सर माना जाता है कि डायबिटीज रोगियों को सभी प्रकार के कार्ब्स से बचना चाहिए, लेकिन कुछ हेल्दी ऑप्शन हैं जिनका डायबिटी रोगी अपराध-मुक्त आनंद ले सकते हैं. उनके बारे में जानने के लिए यहां पढ़ें. डायबिटीज रोगी बेफिक्र खा सकते हैं ये 5 चीजें, ब्लड शुगर लेवल बढ़ने की न करें चिंता Diabetes Diet: डायबिटीज से पीड़ित लोग मॉडरेशन में स्वस्थ कार्ब्स का सेवन कर सकते हैं।

खास बातें: बड़े उतार-चढ़ाव से बचने के लिए नियमित रूप से अपने ब्लड शुगर की जांच करें.मधुमेह रोगियों को कम जीआई स्कोर वाले फूड्स का सेवन करना चाहिए.डायबिटीज रोगियों को फल कम मात्रा में खाने चाहिए और रस से बचना चाहिए. Low Carb For Diabetes: डायबिटीज रोगियों को एक हेल्दी डाइट का सेवन करने की सलाह दी

जाती है जो ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में मदद कर सकता है. इस पुरानी स्थिति से जुड़ी जटिलताओं से बचने के लिए, ब्लड शुगर लेवल को मैनेज करने के लिए सभी जरूरी सावधानियों का पालन करना महत्वपूर्ण है. कुछ फूड्स स्वाभाविक रूप से ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में मदद कर सकते हैं. डायबिटीज डाइट समझना उतना मुश्किल नहीं है जितना लगता है. कई लोग यह भी मानते हैं कि डायबिटीज रोगियों को कार्बोहाइड्रेट के सेवन से सख्ती से बचना चाहिए, लेकिन सच्चाई यह है कि आपको सही कार्ब चुनने की जरूरत है. डायबिटीज रोगी एक सीमित मात्रा में सही प्रकार के कार्ब का सेवन सुरक्षित रूप से कर सकते हैं. यहां कुछ स्वस्थ कार्ब्स हैं जिन्हें आपको मिस नहीं करना चाहिए.

डायबिटीज में खाएं ये हेल्दी कार्ब्स

1. **बाजरा:** बाजरा एक और अनाज है जिसे आप अपने मधुमेह आहार में शामिल कर सकते हैं. इसमें अधिकांश अनाज की तुलना में कम ग्लाइसेमिक सूचकांक होता है और यह आपके ब्लड शुगर लेवल को जल्दी से कम नहीं कर सकता है. इसमें फाइबर भी होता है जो रक्त शर्करा को स्थिर रख सकता है.

2. **ब्राउन राइस:** सफेद चावल की तुलना में ब्राउन चावल को कम संसाधित किया जाता है. यह डायबिटीज वाले लोगों के लिए बेहतर विकल्प है क्योंकि इसमें सफेद चावल की तुलना में कम जीआई स्कोर है. भूरे चावल के साथ सफेद चावल की अदला-बदली के अध्ययन के अनुसार टाइप -2 मधुमेह का खतरा कुछ प्रतिशत तक कम हो जाता है. ब्राउन राइस में फाइबर भी होता है जो पाचन को सुचारू रखता है.

3. **साबुत गेहूं की रोटी:** साबुत गेहूं की रोटी अनाज की खपत को सुनिश्चित करने में मदद कर सकती है. यह उन परिष्कृत संस्करणों की तुलना में डायबिटीज रोगियों के लिए एक सुरक्षित विकल्प है. आप विभिन्न तरीकों से अपनी रोटी का आनंद ले सकते हैं. चीनी से भरे जाम और डिप्स के इस्तेमाल से बचें.

4. **सब्जियां:** सब्जियों को विभिन्न प्रकार के आवश्यक पोषक तत्वों से भरा जाता है. मधुमेह रोगी अपने आहार में सब्जियों को एक से अधिक तरीकों से शामिल कर कई पोषक तत्वों का सेवन सुनिश्चित कर सकते हैं. सलाद से लेकर करी तक, चुनने के लिए बहुत सारे विकल्प हैं.

5. **सभी प्रकार की दालें:** भारत में दलहन का व्यापक रूप से उपभोग किया जाता है. विभिन्न तरीकों से तैयार किए जा सकते हैं. दालें पौधे-आधारित प्रोटीन का एक लोकप्रिय स्रोत हैं. कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले खाद्य पदार्थ स्वस्थ रक्त शर्करा के स्तर को बढ़ावा देने में मदद करते हैं.

शिखर दृष्टि जीवन की...

साप्ताहिक समाचार पत्र

हिल्यू समाचार

शीर्षक सत्यापन पत्र संख्या

RAJHIN16831/20/01/2013-TC

जयपुर >> रविवार, 21 नवम्बर, 2021

hillviewsamachar@gmail.com

दुबई एक्सपो में 45 हजार करोड़ से अधिक के एमओयू और एलओआई पर हुए हस्ताक्षर

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। दुबई एक्सपो राजस्थान के लिए निवेश की दृष्टि से सफल रहा है। इंडियन पैवेलियन में 12 से 18 नवम्बर तक आयोजित राजस्थान सप्ताह के तहत करीब 45 हजार करोड़ रुपये के एमओयू (मेमोरेंडम ऑफ़ अंडरस्टैंडिंग) और एलओआई (लेटर ऑफ इंटेंट) किए गये हैं। जिसमें करीब 29 हजार करोड़ रुपये के 30 एमओयू और करीब 16 हजार करोड़ रुपये के 24 एलओआई शामिल हैं। प्रस्तावित निवेश में पेट्रोकेमिकल क्षेत्र में करीब 10 हजार करोड़, रिन्यूएबल एनर्जी में 7 हजार 500 करोड़, स्वास्थ्य में 5 हजार 500 करोड़, एग्रो प्रोसेसिंग में 4 हजार 500 करोड़ और करीब 4 हजार करोड़ रुपये के स्टार्टअप शामिल है। इसके अतिरिक्त लॉजिस्टिक, सिरेमिक, स्टोन, रियल एस्टेट, ई-वेस्ट रिसाइक्लिंग, आईटी और पर्यटन क्षेत्रों में भी एमओयू और एलओयू किए गये हैं। इस प्रस्तावित निवेश से राज्य में करीब 77 हजार रोजगार के नए अवसर सृजित होने की संभावना है। उद्योग मंत्री श्री परसादी लाल मीणा ने बताया कि दुबई एक्सपो के दौरान हुए 45 हजार करोड रुपये से अधिक के एमओयू और एलओआई राज्य सरकार की नीतियों पर निवेशकों का भरोसा दर्शाता है। साथ ही इन्वेस्ट राजस्थान से पूर्व यह राज्य के लिए अच्छे संकेत हैं। इस निवेश सम्मेलन के तहत अन्य देशों में होने वाले कार्यक्रमों में भी इसका सकारात्मक संदेश जाएगा जिससे राज्य में निवेश आकर्षित होगा। उल्लेखनीय है कि दुबई एक्सपो में स्थित इंडियन पैवेलियन में राजस्थान सप्ताह के दौरान नगरीय विकास मंत्री श्री शांति धारीवाल, उद्योग मंत्री श्री परसादी लाल मीणा और उद्योग राज्य मंत्री श्री अर्जुन सिंह बामनिया की अगुवाई वाले प्रतिनिधिमंडल ने निवेशकों को राज्य में निवेश करने के लिए आंमत्रित किया। साथ ही, प्रवासी राजस्थानियों और एक्सपो में विभिन्न देशों से आए निवेशकों को 24 और 25 जनवरी को आयोजित होने 'इन्वेस्ट राजस्थान' में आंमत्रित किया गया। इस राज्य प्रतिनिधिमंडल में फेडरेशन ऑफ राजस्थान एक्सपोर्टर्स के अध्यक्ष राजीव अरोड़ा, राजस्थान फाउंडेशन के आयुक्त धीरज श्रीवास्तव, रीको ईडी श्रीमती रूक्मणी रियार के साथ ही राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी, उद्योग संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल थे।

लघुकथा

गुमनाम

पुस्तक मेले की सारी स्टॉल चकाचक दिख रही थी। एक से एक दिखने वाली चमक बिखेरती किताबें मदमस्त अंदाज में खूब खुश हो रही थी।

हर कोई निहारे ही जा रहा था .....

करीने से रखी शीशे की दीवार के पीछे मॉडलिंग करती किताबें।

कभी-कभी भीड़ छँटती तो मॉडल किताबें बाहर की ओर झाँक लेती। सड़क किनारे बड़ी सी छतरी के नीचे बैठे शख्स को हमेशा किताबों में नजरे गड़ाए, किताबों के ढेर पर नज़र जम जाती।

कितनी भद्दी लग रही है और पुरानी भी..

क्या लोग उसे अपने लिए खरीदेगें..

एकबार हमारी तरफ देखकर..!!

सपना चन्द्रा
कहलगाँव भागलपुर

तभी स्टॉल के भीतर कुछ साहित्यिक व्यक्तियों का प्रवेश होता है, एकदम सादे से लिबास में .....

किताबें सतर्क हो गई, उन लोगों ने चारों ओर नजरें दौड़ाई, पर उन्हें वो किताब कहीं नहीं दिखी। आपस में कानाफूसी करती किताबें ...आखिर ये कौन सी ऐसी किताब ढूँढ रहे है जो यहाँ नही है..?

उन लोगों में से एक ने बाहर की ओर देखा और दौड़ पड़ा, अरे मिल गई! मिल गई....

तभी उन बेज़ान पड़ी पत्रों के भीतर हलचल हुई, लगता है खास जौहरी की नजर पड़ी है।

किलो में बिक कर अपना मोल भुला चुकी किताबें राह चलते लोगों की गर्द फाँख रही थी। आँखे फाड़े मॉडल किताबें आखिर पूछ ही बैठीं, वहाँ क्या है जो यहाँ नहीं..?

एक साहित्यिकार ने जबाव दिया ...वहाँ तुम्हारे पुरखे हैं जो गुमनामी का दाग ढोते किसी पारखी के इंतज़ार में पड़े हैं।

बेमौत मरती नदियाँ, त्रास सहेंगी सदियाँ

आशीष तिवारी निर्मल
लालगांव रीवा

छठ पर्व पर एक भयावह तस्वीर यमुना नदी दिल्ली की सामने आयी, जिसमें सफेद झाग से स्नान व अर्क देते श्रद्धालु दिखे।

यह बात तो जगजाहिर है कि समूचे विश्व में हिन्दुस्तान ही एक ऐसा देश है जहां नदियों को माँ की उपमा दी गई है, पवित्र माना गया है। लेकिन वर्तमान समय में जितनी दुर्दशा हिन्दुस्तान में नदियों की है शायद ही किसी अन्य राष्ट्र में हो। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा अलग-अलग राज्यों की निगरानी एजेंसियों के हालिया विश्लेषण ने इस बात की पुष्टि की है कि हमारे महत्वपूर्ण सतही जल स्त्रोतों का लगभग 92 प्रतिशत हिस्सा अब इस्तेमाल करने लायक नही बचा है। वहीं रिपोर्ट में देश की अधिकतम नदियों में प्रदूषण की मुख्य वजह कारखानों का अपशिष्ट गंदा जल, घरेलू सीवरेज , सफाई की कमी व अपार्याप्त सुविधाएं, खराब सेप्टेज प्रबंधन तथा साफ - सफाई के लिए नीतियों की गैरमौजूदगी को माना गया है।देश की राष्ट्रीय नदी गंगा और यमुना अभी बहस के केंद्र में है। साल-दर-साल गंगा और यमुना नदी के प्रवाह में दर्ज होते प्रदूषण के स्तर से नदी को साफ करने के लिए की जा रही कोशिशों पर सवाल उठते हैं। पिछले साल अगस्त में एनजीटी, जो गंगा को साफ करने के कार्यक्रम की निगरानी करता है, ने केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से कहा था कि वह नदी के इन हिस्सों की शिनाख्त करे, जहां का पानी नहाने और पीने के योग्य है। बोर्ड ने इस बाबत एक मानचित्र तैयार किया जिसमें बताया गया है कि गंगा और यमुना के मुख्य मार्ग के पानी की गुणवत्ता चिंताजनक है। वहीं इन नदियों में प्रदूषण की स्थिति जस का तस बनी हुई है या यूं कहे कि स्थिति बद् से बदत्तर होती जा रही है।

केंद्र सरकार ने गंगा की सफाई को प्रमुख एजेंडे के रूप में प्राथमिकता देते हुए तीन चार साल पहले नदी सफाई कार्यक्रम शुरू किया था, लेकिन इस कार्यक्रम के शुरू होने के तीन साल बाद भी यमुना में पानी की गुणवत्ता में कोई सुधार नहीं दिखा है। सुप्रीम कोर्ट और एनजीटी के कई आदेशों के बावजूद दिल्ली में यमुना का लगभग पूरा इलाका बुरी तरह प्रदूषित है।

कोविड माहामारी के चलते भारत सरकार की तरफ से लागू किए गए लाकडाउन से गंगा और यमुना जैसी नदियों की गुणवत्ता पर पड़े प्रभावों को जानना भी दिलचस्प है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने लॉकडाउन से पहले (15 से 21 मार्च) व लॉकडाउन के दौरान (22 मार्च से 15 अप्रैल) गंगा नदी के पानी की गुणवत्ता का विश्लेषण किया, जिसमें साफ तौर पर पता चला कि लॉकडाउन से इस पर कोई असर नहीं पड़ा। इसके विपरीत यमुना नदी के पानी की गुणवत्ता में लॉकडाउन के दौरान मामूली सुधार हुआ, हालांकि नदी प्रदूषित ही रही।

गंगा पर तैयार की गई रिपोर्ट में असल आंकड़े साझा नहीं किए गए हैं, लेकिन एक मोटा-मोटी ट्रेंड दिखाया गया है, जिससे पता चलता है कि अध्ययन की अवधि में बीओडी और सीओडी के स्तर में किसी तरह का बदलाव नहीं आया, जो इस बात का संकेत है कि लॉकडाउन के दौरान गंदे पानी का बहाव कम नहीं हुआ। रिपोर्ट कहती है, औद्योगिक गंदे पानी, कृषि सिंचाई के पानी की अनुपस्थिति और ताजा पानी के बहाव के कारण डिजॉल्व्ड ऑक्सीजन में औसत इजाफा और नाइट्रेट में गिरावट दर्ज की गई।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) की 2018 की रिपोर्ट भी बेहद चिंताजनक है रिपोर्ट के मुताबिक देश के 36 राज्य व केंद्र शासित प्रदेशों में से 31 में नदियों का प्रवाह प्रदूषित है। महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा लगभग पचास से भी ज्यादा प्रदूषित प्रवाह हैं। इसके बाद असम, मध्यप्रदेश, केरल, गुजरात, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, गोवा, उत्तराखंड, मिजोरम, मणिपुर, जम्मू-कश्मीर, तेलंगाना, मेघालय, झारखंड, हिमाचल प्रदेश, त्रिपुरा, तमिलनाडु, नागालैंड, बिहार, छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश, सिक्किम, पंजाब, राजस्थान, पुडुचेरी, हरियाणा और दिल्ली का नंबर आता है।

साल 2015 में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की तरफ से जारी की गई रिपोर्ट में बताया गया था कि 275 नदियों के 302 प्रवाह प्रदूषित हैं जबकि साल 2018 की रिपोर्ट में यह आंकड़ा तेजी से बढ़ते हुए 323 नदियों के 351 प्रवाह प्रदूषित होने तक पहुंच गया है । पिछले तीन सालों में देखा गया है कि खतरनाक रूप से प्रदूषित 45 प्रवाह ऐसे हैं, जहां के पानी की गुणवत्ता बेहद खराब है। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने अधिसूचित किया कि नदियों में छोड़े जाने वाले परिशोधित गंदे पानी की गुणवत्ता काफी खराब है और इसमें बोयोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड यानी बीओडी जो कि प्रदूषण को मापने का एक पैमाना है जिसकी मात्रा प्रति लीटर 30 मिलीग्राम है। एक लीटर पानी में 30 मिलीग्राम से अधिक बीओडी को पानी की गुणवत्ता बेहद खराब होने का संकेत माना जाता है। लेकिन भारत की नदियों के जल में यह मात्रा 30 मिली ग्राम से ऊपर होती जा रही है जो कि बेहद चिंता का विषय है।

हमारी नदियां मर रही हैं। यही हाल ईकोसिस्टम का है, जो नदियों को बचाए रखता है। नदियों पर न केवल प्रदूषण बल्कि इसके रास्ते में बदलाव, खत्म होती जैवविविधता, बालू खनन और कैचमेंट एरिया के खत्म होने का भी असर पड़ा है। अन्य खुले जलाशय जैसे झील, तालाब या टैंक या तो अतिक्रमण का शिकार हैं या फिर वे सीवेज और कूड़े का डंपिंग ग्राउंड बन गए हैं।

व्यंग्य

किस्सा नाक का

शरीर के अन्य महत्वपूर्ण अंगों की तरह नाक का योगदान भी हमारे शरीर में बहुत महत्वपूर्ण होता है। ये हमारे शरीर के अपशिष्ट पदार्थों को बाहर निकालने वाला एक महत्वपूर्ण अंग है। कोरोना काल में ये शरीर के उन नाजुक अंगों में एक हुआ करता था। जिसको ढककर रखने की आवश्यकता पर जरुरत से ज्यादा जोर दिया गया था। हमारे समाज में कुछ ऊँची नाक वाले लोग भी होतें हैं। जिनकों अपनी नाक बहुत प्यारी होती है। इनकी नाक के कटने की संभावना बराबर बनी रहती है। राजनैतिक लोग जब चुनाव लड़ने के लिए जातें हैं। तो ये उनके लिए भी नाक बचाने का बहुत बड़ा प्रश्न होता है।

एक तरह से प्रतिष्ठा का पर्यायवाची शब्द नाक ही होता है। जिसे हम सामाजिक जीवन में नाक के उपनाम से भी जानतें हैं। आदिकाल में लक्ष्मण ने शूर्पनखा की नाक प्रेम निवेदन करने पर काट ली थी। राक्षसी प्रवृतियों पर लगाम लगाना आदिकाल से देवताओं का काम रहा। द्रोणाचार्य से लेकर और भी कई उदाहरण हमारे आदिकालीन ग्रंथों में भरे पड़ें हैं। जैसे अहिल्या और इंद्र प्रसंग हैं। जहाँ इंद्र ने माता अहिल्या का प्रत्यक्ष तौर पर नाक काट ली थी। देवताओ के बहुत सारे अत्याचारों से वेद- पुराण आध्यात्मिक प्रसंग भरे पड़ें हैं। पुरातन समय और आज के समय में बड़ा अंतर आ गया है। आज के मनुष्य किसी अँधेरी रात में अगर शूर्पनखा को पा जाएँ। तो उसकी नाक , आँख कान कुछ साबुत ना बचेगी। और, पुलिस वाले रातों- रात रावण की गैर मौजूदगी में शूर्पनखा का शव भी बिना अंत्यपरीक्षण के जल्दी बाजी में जला दें ऐसा हमारा सामाजिक ढाँचा धीरे - धीरे बनता चला गया है। वैसे साबुत नाक खापें भी नहीं बचने देतीं और ऑनर किलिंग को अंजाम देतीं हैं। प्रेम का जितना उदार रूप हम अपने सामाजिक जीवन में पातें हैं व्यवहारिक रूप में हम उतना उदार नहीं हो पाते क्योंकि प्रेम को हमने सिर्फ किताबों में पढ़ा है। कृष्ण और राधा। मीरा और कृष्ण या और लोग जिनका प्रेम पुराणों में बहुत ही सात्विक माना गया है। हमारे निजी जीवन में उतना ही अव्यवहारिक या किलिष्ट है। व्यवहारिक जीवण में प्रेम करना। आ बैल मुझे मार वाली कहावत का अपने ऊपर चरितार्थ करने जैसा होगा। या आप बारूद पर बैठकर उसको दियासलाई दिखा रहें हों जैसा होगा। अब कौन बैठे मिसाईल के मुँह पर जब पता है कि उसमें आग लगने वाली ह। लेकिन, इतिहास गवाह है कि कृष्ण और राधा, शीरीं और फरहाद, लैला और मजनूँ ने, सलीम और अनार कली इन सभी ने जो प्रेम की मिसाल पेश की। वो आधुनिक प्रेमियों के लिए एक नजीर बन गई।

महेश कुमार केशरी
बोकारो झारखंड

इसलिए खापों के खौफ से मत घबराईये। और खुद भी प्रेम कीजिये और दूसरों को भी प्रेम करने की प्रेरणा दीजिये। भले ही लोग नाक काट लें या लोगों की नाक कट जाये!

शीत प्रीत के भाव जगाए

चुपके-चुपके रख रही, सर्दी अपने पांव ।
बिल्कुल भी भाए नहीं, अब तो कोई छांव ।
अब तो कोई छांव, किसी को नहीं सुहाए ।
धूप लजीली किरण, करों से तन सहलाये ।
कह 'कोमल' कविराय, विहग कोटर में दुबके ।
आई दुबके पांव, सरद ऋतु चुपके-चुपके ।
उजली-उजली सी लगे, ठंडी-ठंडी धूप ।
सरद रूपसी का लगे, निखरा-निखरा रूप ।
निखरा-निखरा रूप, सभी के मन को भाए ।
सबके मन में शीत, प्रीत के भाव जगाए ।
कह 'कोमल' कविराय, अगर छा जाए बदली ।
नहीं निकलती धूप, तनिक भी उजली-उजली ।

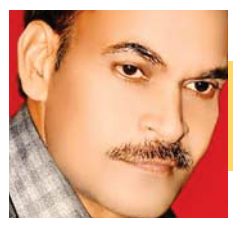

श्याम सुंदर
श्रीवास्तव 'कोमल'
लहार, भिण्ड (म0प्र0)

क्या आर्थिक स्वतंत्रता का पुनरुत्थान संभव है?

सत्य प्रकाश सिंह
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

विश्व के प्रत्येक देश के संविधान पर अपने युग और देश की परिस्थितियों का प्रभाव लक्षित होता है। आधुनिक युग की देहरी पर खड़ा भारत का मिश्रित संविधान व्यावहारिक अनुभव के सहारे इतिहास के पुष्टि का प्रमाण है। मिश्रित अर्थव्यवस्था में पूंजीवादी समाज की विडंबना यह है कि इसमें मनुष्य न केवल अपनी आर्थिक स्वतंत्रता को खो चुका है बल्कि वह यह भी नहीं जानता कि वह उसे खो चुका है। मिश्रित अर्थव्यवस्था में खोई हुई आर्थिक स्वतंत्रता को वापस प्राप्त करने के लिए मनुष्य को यह अनुभव हो जाए कि उसकी कोई मूल्यवान वस्तु गुम हो गई है और वह उसकी तलाश शुरू कर दे। क्या यह संभव है? परंतु सुखभ्रांतिमूलक उपभोक्तावादी संस्कृति की छाया में आर्थिक स्वतंत्रता की संकल्पना निर्मूल साबित हो रही है। आर्थिक स्वतंत्रता के यथार्थ का परिमाप लोकतंत्र की संकल्पनाओं बुनियाद पर खड़ा हुआ है ना कि पूंजीवादी बाजार की विकृतियों पर। आर्थिक क्षेत्र में मनुष्य के बीच जो घोर विषमता पाई जाती है वह उनकी प्राकृतिक असमानता का परिणाम नहीं है बल्कि उत्पादन के साधनों पर पूंजीपतियों के स्वामित्व का परिणाम है। विषमता का निराकरण आर्थिक समानता स्थापित करने की जरूरत है। केवल मनोवैज्ञानिक दृष्टि से लोगों को यह कह देना की संपूर्ण समाज में आर्थिक समानता व्याप्त है। तुच्छ भौतिक संस्कृति का गुणगान करने से नहीं बल्कि मिलजुल कर रहने और मिल बांट कर खाने की परंपरा विकसित होनी चाहिए जो आर्थिक समानता का मूल मंत्र है। जब तक मनुष्य की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है तब तक सांस्कृतिक सृजनात्मकता की आशा करना व्यर्थ है। समाज से आर्थिक विषमता का विलोपन आर्थिक समानता का सामाजिकरण भारत जैसे विशाल जन समुदाय के लिए नितांत आवश्यक है। आर्थिक समानता सभ्य समाज की प्रथम शर्त होती है। किसी भी राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया में आर्थिक तत्व, उत्पादन ,विनिमय ,और वितरण पद्धति की भूमिका सबसे प्रधान होती है। भारत में आर्थिक असमानता का दर्शन अपने सिर के बल खड़ा हुआ है अब जरूरत है उसे पैर के बल खड़ा होने की।

मैं पत्रकार हूँ...

हाँ मैं पत्रकार हूँ।
बेईमानों की नज़र में बेकार हूँ।
लिखता हूँ डंके की चोट पर,
ईमानदारी की ललकार हूँ।
हाँ मैं पत्रकार हूँ।

भ्रष्टाचारियों को अखरता हूँ।
पर मैं किसी से नहीं डरता हूँ।
खरीदने की कोशिश की धनवानों ने,
पर मैं सच्चाई पर मरता हूँ।
समाज के हर तबके की बगिया की बहार हूँ।
हाँ मैं पत्रकार हूँ।

कुछ पत्रकार धनवान हो गए,
कुछ धनवान पत्रकार हो गए,
लिखते हैं अब वही, जो लिखवाते हैं,
इतने क्यों सब लाचार हो गए,
पक्ष में लिखूं जब तक, तब तक सबका प्यार हूँ।
हाँ मैं पत्रकार हूँ।

पत्रकारों की भी आ गई है भरमार,
गाड़ी पर भी लिखते हैं पत्रकार,
रौब जमाते हैं सभी पर,
नेताजी के ख़ास बन गए ठेकेदार,
छोटा नहीं अब मैं बड़ा ठेकेदार हूँ।
हाँ मैं पत्रकार हूँ।

सारा दिन काम ईमानदारी से करता,
मालिकों का विज्ञापनों से भी पेट नहीं भरता,
सरकारी विभागों से कमाते हैं बहुत,
मेरी तनख़्वाह देने का उनका मन नहीं करता,
करता मैं भी विज्ञापन का व्यापार हूँ।
हाँ मैं पत्रकार हूँ।

असली ख़बर दब जाती है,
बेकार हैडलाइन बन जाती है,
सकारात्मकता वाली खबर नहीं छपती,
घटिया फ्रंट पेज पर लग कर आती है,
इन सब बातों से मैं आहत और लाचार हूँ।
हाँ मैं पत्रकार हूँ।

धनवानों ने ही मीडिया चलाना है तो,
गरीब आम जनता की आवाज़ दब जाएगी,
पैसे बनाने का ज़रिया बन जायेगा मीडिया,
वही छपेगा जो ऊपर से आवाज़ आएगी,
जिस सच्चाई के पीछे लड़ी महाभारत मैं वो दीवार हूँ।
हाँ मैं पत्रकार हूँ।

जब तक कलम में दम है मेरी,
मैं लिखूंगा हर हाल में,
तीखी करो कलम की नोक अपनी,
फंसना मत तुम कहीं सत्ता की चाल में,
मिटने नहीं दूंगा हस्ती, मैं वह क़रार हूँ।
हाँ मैं पत्रकार हूँ।
हाँ मैं पत्रकार हूँ।

रवींद्र कुमार शर्मा
घुमारवीं,
जिला बिलासपुर हि.प्र.

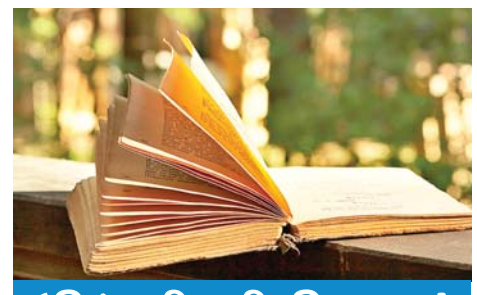

'ज़िंदगी की किताब'

दीवाली की सफ़ाई में,
कचरे के ढेर में,
बेतरकीब पड़े काग़ज़ों के पन्नो पर,
बिखरे पड़े मेरे जज़्बात,
कुछ कहने को बेताब।

ठहरी हुई राह पर,
ख़ामोशी की चुभन से
अहसास करा रहे,
कैसे बेज़ुबान बनी
बैठी हूँ मैं?

रुँधे गले से,
उठा कर लगाया जो गले से,
रो दिए, अश्क़ बह निकले,
चेहरे की झुर्रियों के बीच,
राह बनाते हुए,
छोड़ते रहे निशाँ...

आड़ी तिरछी लकीरों के
ख़ामोश नीला आसमान तकता रहा,
चिंघाड़ा जो बादल,
शब्दों के विस्फोट से,
दौड़ कर समेट कर पन्ने,
लगाए जो सीने से,
रिस पड़ा बादल,
और झमाझम बारिश...

सलीक़े से जमा कर पन्ने,
सजाए जो जज़्बात,
हाथ में आ गई...
ज़िंदगी की किताब।

कमलेश शर्मा
जयपुर

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

04

जयपुर >> रविवार, 21 नवम्बर, 2021

45 साल से कम उम्र के लोग करते हैं भांग का सेवन, तो पड़ सकता है दिल के दौरा

एक नए अध्ययन में कहा गया है कि 45 वर्ष से कम उम्र के वयस्क जो भांग का उपयोग करते हैं, उन्हें दिल का दौरा पड़ने की संभावना दोगुनी थी और बहुत ज्यादा उपयोग करने वालों में संभावना अधिक थी. 45 साल से कम उम्र के लोग करते हैं भांग का सेवन, तो पड़ सकता है दिल के दौरा : अध्ययन में 18 से 44 वर्ष के बीच के 33, 000 वयस्क शामिल थे

शोधकर्ताओं की रिपोर्ट है कि कैनेडियन मेडिकल एसोसिएशन जर्नल में प्रकाशित निष्कर्ष बताते है कि बार-बार भांग के उपयोग और दिल के दौरे के बीच एक लिंक है. इस अध्ययन में युवा वयस्कों में दिल के दौरे के जोखिम के साथ भांग के उपयोग की आवृत्ति और खपत के तरीके को दर्शाता है. जो आमतौर पर अपनी उम्र में उच्च जोखिम में नहीं होते हैं. यूनिटी हेल्थ टोरंटो के एक चिकित्सक वैज्ञानिक डॉ. करीम लधा ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा, 'हालिया लीगालाइजेशन और गैर-अपराधीकरण के साथ, उत्तरी अमेरिका में युवा वयस्कों में भांग का उपयोग बढ़ रहा है और हम हृदय स्वास्थ्य पर इसके प्रभावों को पूरी तरह से नहीं जानते हैं.' हमने हाल ही में भांग के उपयोग और मायोकार्डियल रोधगलन के बीच एक संबंध पाया, जो मजबूत संवेदनशीलता विश्लेषणों की एक श्रृंखला में बना रहा.

यह जुड़ाव धूम्रपान, वाष्पीकरण और अन्य तरीकों जैसे कि फूड्स सहित भांग के सेवन के विभिन्न रूपों में कम्पेटिबल था लधा ने कहा. इससे पता चलता है कि इस संबंध में खपत का कोई भी तरीका दूसरे से सुरक्षित नहीं है.

संख्याओं के जरिए अध्ययन

शोधकर्ताओं ने रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र (सीडीसी) द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के आंकड़ों की जांच की. अध्ययन में 18 से 44 वर्ष के बीच के 33, 000 वयस्क शामिल थे, जिनमें से 17 प्रतिशत से अधिक ने कहा कि उन्होंने पिछले 30 दिनों के भीतर भांग का इस्तेमाल किया था.

उन उपयोगकर्ताओं में से 1.3 प्रतिशत (4,610 में से 61) ने कथित तौर पर दिल के दौरे का अनुभव किया. गैर-कैनाबिस उपयोगकर्ताओं में से 0.8 प्रतिशत (28,563 में से 240) को कथित तौर पर दिल का दौरा पड़ा था.

भांग के उपयोगकर्ताओं में सिगरेट, ई-सिगरेट धूम्रपान करने वाले और अत्यधिक शराब पीने वाले पुरुष होने की संभावना अधिक थी, जिसने उनके उच्च जोखिम में भी योगदान दिया हो सकता है, लेकिन वे कारक, साथ ही अन्य जो दिल के दौरे में योगदान दे सकते हैं, उन्हें विश्लेषण के लिए समायोजित किया गया था.

शोधकर्ताओं ने नोट किया कि अध्ययन भांग के उपयोग और दिल के दौरे के बीच संबंधों पर जानकारी प्रदान करता है लेकिन जैविक तंत्र नहीं.

कैनबिस कई अलग-अलग तंत्रों के माध्यम से एमआई (मायोकार्डियल इंफार्क्शन) को प्रेरित कर सकता है, लेकिन डेटा अक्सर जटिल और निर्धारित करना मुश्किल होता है, क्योंकि कई व्यक्ति भांग और सिगरेट दोनों का धूम्रपान करते हैं, जो हृदय रोग और दिल के दौरे के लिए एक जोखिम कारक भी है, डॉ. मोंटी कनाडा में अल्बर्टा विश्वविद्यालय में सामान्य आंतरिक चिकित्सा और तंत्रिका विज्ञान विभाग में सहायक नैदानिक प्रोफेसर घोष ने हेल्थलाइन को बताया.

'कैनबिस विशेष रूप से टीएचसी के साथ हम हृदय गति के साथ-साथ ब्लड प्रेशर में वृद्धि देखते हैं, जो दोनों काफी तेज हो सकते हैं, जिससे दिल का दौरा पड़ सकता है. यह पहले घंटे के उपयोग के बाद विशेष रूप से सच है,' उन्होंने कहा.

घोष ने समझाया, 'हृदय वाहिकाओं में ऐंठन सहित अन्य संभावित कारण हैं, जिससे हृदय में ब्लड सर्कुलेशन कम हो जाता है, जिससे दिल का दौरा पड़ता है.' एक चिंता यह भी है कि इससे प्लेटलेट्स अधिक चिपचिपे हो सकते हैं, जो वाहिकाओं को अवरुद्ध कर सकते हैं. एमआई का विशाल बहुमत उन व्यक्तियों में हुआ जो भांग का सेवन करते थे.

जागरूकता का महत्व

अध्ययन शोधकर्ताओं ने कहा कि उन्होंने दिल के दौरे के आंकड़ों के साथ जोखिम कारक डेटा का विश्लेषण किया, क्योंकि यह अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए सबसे अच्छा उपलब्ध स्रोत था, टोरंटो विश्वविद्यालय में पीएचडी उम्मीदवार निखिल मिस्त्री ने कहा.

निखिल ने कहा, 'एक युवा वयस्क के रूप में भांग के उपयोग से जुड़े जोखिमों से अवगत होना महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से वर्तमान माहौल में जहां हम गलत सूचनाओं और गैर-साक्ष्य-आधारित स्वास्थ्य सिफारिशों के धन के संपर्क में हैं.' कैनबिस अधिवक्ताओं का कहना है कि बेहतर नींद, मनोदशा, फोकस और पाचन सहित जिम्मेदारी से और संयम में उपयोग किए जाने पर दवा के चिकित्सीय लाभ हो सकते हैं.

पूरे दिन बगल से नहीं आएगी बदबू, देखें आलसी लोगों के लिए ख़ास उपाय

अत्यधिक पसीना आने के कारण कुछ लोगों के अंडरआर्म्स या बगल से बदबू आने लगती है. ये बदबू भीड़ या लोगों के बीच में शर्मिंदगी का कारण बन सकती है. लोग बगल की बदबू दूर करने के लिए Deodorant का इस्तेमाल करते हैं. लेकिन यह कुछ ही समय तक बदबू को रोक पाता है और साथ ही स्किन पर रैशेज और डार्क स्किन का कारण भी बनता है. बगल की बदबू दूर करने के लिए डिओडरेंट की जगह घर में रखी ये नैचुरल चीजें (Natural and Homemade Deodorants) इस्तेमाल करें. पूरे दिन अंडरआर्म्स से बदबू नहीं आएगी.

अंडरआर्म्स की बदबू दूर करने के लिए नैचुरल डिओडरेंट: आयुर्वेदिक एक्सपर्ट डॉ. अपर्णा पद्मानाभन ने पसीने की बदबू दूर करने के लिए नैचुरल डिओडरेंट बनाने का तरीका बताया है. लेकिन उन्होंने ये भी बताया कि इन चीजों को अंडरआर्म्स शेविंग के तुरंत बाद इस्तेमाल ना करें और ज्यादा असर पाने के लिए इन्हें साफ बगल पर ही लगाएं.

आलसी लोगों के लिए सबसे आसान तरीका: एक चुटकी बेकिंग सोडा को एक बूंद पानी या गुलाबजल के साथ मिलाकर पेस्ट बना लें. नहाने के बाद इस ताजा पेस्ट को लगाएं. इसका रिजल्ट देखकर चौंक जाएंगे.

पहला नैचुरल डिओडरेंट: 1/4 हिस्सा टैपिओका (कसावा) का आटा, 1/4 हिस्सा बेकिंग सोडा, 1/3 हिस्सा नारियल तेल, 3-4 बूंद खसखस या चंदन का एसेंशियल ऑयल मिलाकर एक एयरटाइट कंटेनर में स्टोर कर लें और जरूरतानुसार नहाकर अंडरआर्म्स पर लगाएं.

दूसरा नैचुरल डिओडरेंट: 1/4 हिस्सा बेकिंग सोडा, 1/4 हिस्सा कोर्न स्टार्च, 1/3 हिस्सा आलमंड ऑयल और 4-5 बूंद किसी भी एसेंशियल ऑयल की अच्छी तरह मिलाएं और एक कंटेनर में स्टोर कर लें. अंडरआर्म्स की बदबू दूर करने के लिए जरूरतानुसार या बाहर जाने से पहले बगल पर लगा लें.

तीसरा नैचुरल डिओडरेंट: 1/4 हिस्सा बेकिंग सोडा, 1/4 हिस्सा अरारोट का आटा, 1/3 हिस्सा नारियल तेल और 4-5 बूंद नीम के एसेंशियल ऑयल को मिलाकर बगल पर लगाएं. इस मिश्रण को भी एक कंटेनर में स्टोर कर लें और जरूरत पड़ने पर बगल की बदबू दूर करने के लिए लगाएं.

Pink #Café

P. No, 541, Lane Number 6, near Shani Mandir, Raja Park, Jaipur, Rajasthan

A place With Lush green, open mic arena
and delicious food with beautiful scenic view
is now open for your friends and family
Always there to Celebrate your special days here

25% Discount offer
Go on Instagram handle of "pinkhashtagcafe"
for more details
PINKHASHTAGCAFE

मैनेजमेंट फंडा

शालिनी श्रीवास्तव

हमारे आस-पास का वातावरण हमारे व्यक्तित्व का परिचायक होता है। हमारी पहली पहचान हमारे घर, दफ़्तर, हमारी टेबिल हमारे कमरे, हमारे वाहन के रखरखाव से होती है। हमारी छवि हमारे वातावरण व प्रस्तुतीकरण पर निर्भर करती है। इसी प्रकार आपका प्रबंधन, आपकी सोच, आपके व्यक्तित्व का परिचायक बनता है। आपकी छवि के दर्शन महज़ आपकी ख़ूबसूरती, पहनावे, रहन-सहन, शौक बातचीत से नहीं, बल्कि सर्वप्रथम आपके इर्द-गिर्द के माहौल से होते हैं।

कुछ ख़ास तथ्य

1. यदि आप अस्त-व्यस्त हैं तो आपका प्रबंधन अवश्य पस्त होगा चाहे आप कितने भी सख़्त हों।

2. आपके सहयोगी आपका अनुसरण कर रहे हैं ये हमेशा याद रखें।

3. ग्राहक के साथ किया जाने वाला अच्छा व्यवहार चलता-फिरता विज्ञापन है। अतः ऐसा आदर्श प्रस्तुत करें कि आपके साथी भी वहीं व्यवहार करे को बाध्य हो जायें।

4. आपका पद आपकी छवि दूसरों के लिये अनुकरणीय है अतः आपका पहनावा, चाल-चलन, व्यवहार, संप्रेषण क्षमता, हमेशा आदर्श होना आवश्यक है।

5. क्योंकि आप प्रबंधक या लीडर हैं अतः साथियों से अपेक्षा करने से पूर्व स्वयं भी प्रत्येक नियम, नीति-निर्देश का अनुसरण करें।

6. अपने विचार, अपने तौर-तरीके के बारे में सहयोगियों को हमेशा अवगत करायें ताकि वे आपके अनुकूल परिणाम दे सकें।

7. हम किसी को नहीं बदल सकते किंतु स्वयं को बदलना हमारे नियन्त्रण में होता है। अतः अच्छे प्रबंधन के लिये स्वयं से ही शुरूआत करें।

7. कर्मचारी कार्य करने के लिये हैं और आप प्रेरित करने के लिये। आप प्रबंधन के लिये उतने ही उत्तरदायी हैं जितने कि आपके सहयोगी।

हँसना मना है...

टीचर–अगर रात में मच्छर काटे तो क्या करना चाहिए?

लड़का–चुपचाप खुजा कर सो जाना चाहिए क्योंकि आप रजनीकांत तो हो नहीं जो मच्छर से सॉरी बुलवा लोगे।

साधु–जब हम कई साल नहीं बोलते उसे मौन व्रत कहते है।

पति–हम लोग उसे शादी कहते हैं।

बेटा–पिताजी, आप बहुत किस्मत वाले हैं।

पिताजी–वो कैसे बेटा?

बेटा–क्योंकि मैं फैल हो गया हूँ। आपको मेरे लिए किताबें नहीं खरीदनी पड़ेंगी।

हमारे वन्य जीव : लुप्तप्रायः ब्लैक बक

कविता माथुर

प्यारे बच्चों को कविता आंट का ढेर सारा प्यार,

बच्चों, मैंने कान्हा राष्ट्रीय उद्यान, पेंच नेशनल पार्क, बैनरघट्टा नैशनल पार्क और बांदीपुर के जंगलों में घूमते हुए बेशुमार तादाद में चीतल (स्पॉटेड-डियर) देखे , लेकिन कान्हा राष्ट्रीय में इन्हीं चीतलों के मध्य एक , सिर्फ़ एक , ब्लैक-बक यानी कि 'इंडियन-एंटीलोप ' को देखकर हम ख़ुशी से उछल पड़े । जानते हो क्यों? क्योंकि कभी हज़ारों की संख्या में पाये जाने वाले ये निरीह जीव आज रेड-डेटा-बुक-लिस्ट में लुप्तप्राय जानवरों की क़तार में हैं।

बच्चों, आपने एक मशहूर एक्टर के ब्लैक-बक किलिंग में इन्वॉल्वमेंट के बारे में तो सुना ही होगा। कारण यही था कि मांसाहारियों में इसका मीट बेहद स्वादिष्ट माना जाता रहा है, जो कि इनकी संख्या में अप्रकाशित रूप से कमी लाने का ज़िम्मेदार है। साथ ही डी-फोरेस्टेशन की वजह से इनके नेचुरल हैबिटेट का ह्रास होना तो है ही एक कारण। है न् दुःख की बात!

कहा जाता है कि ब्लैक-बक दो मिलियन सालों पहले सहारो-ऐरैबिक रीजन से हिंदुस्तान आया था । अब ये हिंदुस्तान और आसपास के इलाक़ों जैसे पाकिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश इत्यादि में पाया जाता है । पाकिस्तान व बांग्लादेश में क़रीब क़रीब लुप्त हो ही चुका है जबकि हिंदुस्तान व नेपाल में लुप्त होने की कगार पर है। नेपाल के बार्दिया नैशनल पार्क में ये सिर्फ़ एक सौ चौंरासी की संख्या में बचे हैं । अपने देश हमें भी हालात बहुत अच्छे नहीं हैं। वाइल्डलाइफ़ प्रोटेक्शन एक्ट उन्नीस सौ बहत्तर के स्केड्यूल-वन के तहत इन्हें सुरक्षा दी गई है।

राजस्थान के अलावा हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, आँध्र प्रदेश इत्यादि में ये पाये जाते हैं। आंध्र प्रदेश के तो ये स्टेट-एनिमल हैं।

औसतन उन्तीस से तैंतीस इंच हाइट और अडतीस किलो वजन के मेल ब्लैक बक के क़रीब पैंतीस से पिचहत्तर सेंटीमीटर तक के ऊपर की तरफ़ खड़े हुए स्पाइरल हॉर्न होते हैं। मेल का रंग डार्क ब्राउन से काला तक हो सकता है और फ़ीमेल भूरी होती है। मेल और फ़ीमेल दोनों का निचला भाग सफ़ेद होता है। काले मुँह के इन पशुओं की आँखों के चारों तरफ़ सफ़ेद घेरा इन्हें नायाब ख़ूबसूरती प्रदान करता है। दरअसल इनके काले रंग के ही कारण सबसे पहले सन् अठारह सौ पचास में इनका नाम 'ब्लैक बक' रखा गया । इन्हें काला हिरन, कृष्ण-मृग , कृष्णसार, कडयिल (हिन्दी) कल्वित (मराठी),कृष्ण जिंका (तेलुगु) , इरालाइ-मान (तमिल) नामों से भी जाना जाता है। **क्रमशः....**

Rivaaj Clothing

http://www.rivaajclothing.com
Rivaajjaipur rivaajclothingjaipur@gmail.com
Shivgyan Commercial Block
Lane 3, Rajapark, Jaipur
+91 1412621223

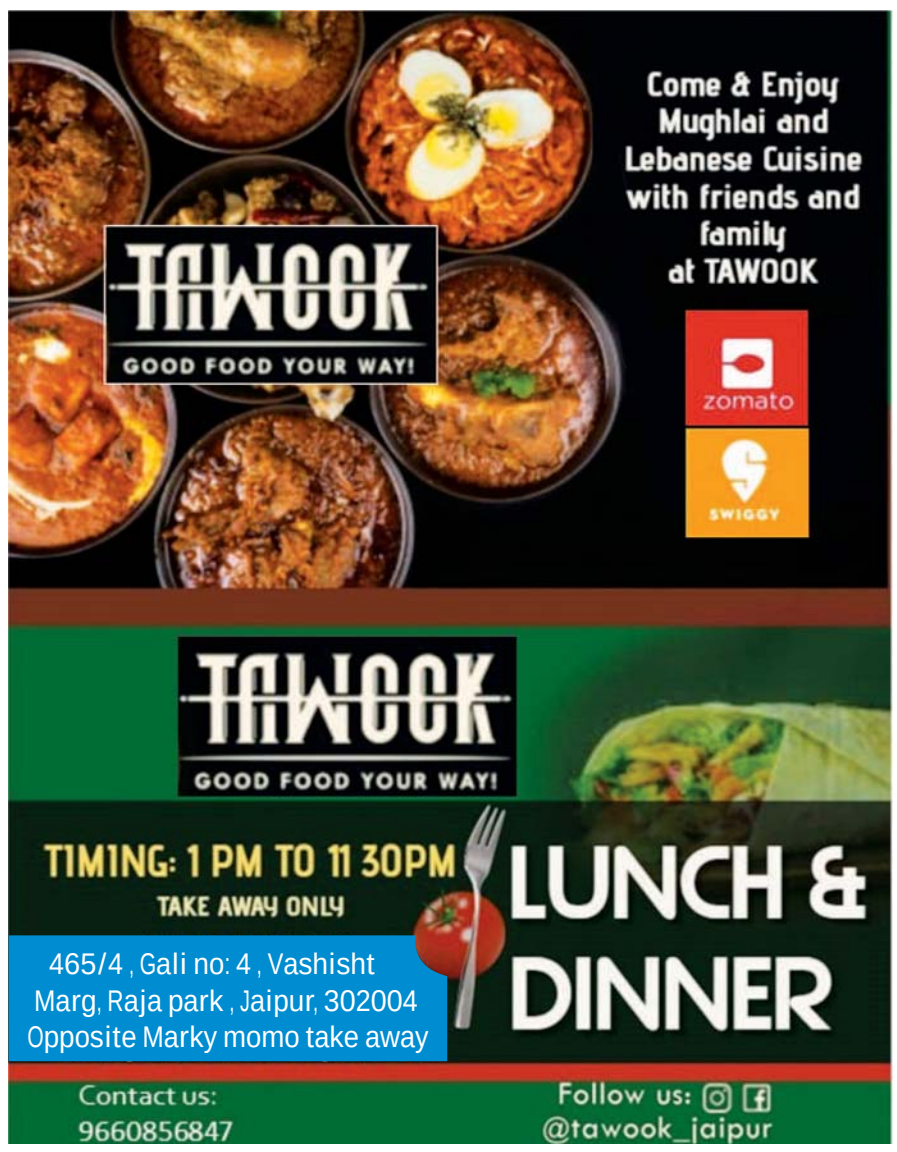

कृषि प्रबंधन पर ध्यान दें किसान

वर्तमान समय विदर्भ के किसानों के लिए महत्वपूर्ण है. कृषि विशेषज्ञों ने बताया है कि रबी की मुख्य चारा फसलों की बुवाई का समय मध्य नवंबर तक होता है. बुवाई के लिए उन्नत किस्मों का उपयोग करें तथा सही मात्रा में पोषक तत्व प्रबंधन करें. आइए जानते हैं कि चारा फसलों के अलावा सब्जियों और फलों के लिए किसान क्या-क्या कर सकते हैं. जानिए यह वक्त किन फसलों की बुआई और किनका ध्यान रखने का है.

सब्जी वाली फसलों के लिए

- कद्दूवर्गीय सब्जियों में फल मक्खी की निगरानी करते रहें. इसके लिए मिथाइल यूजीनोल ट्रेप का प्रयोग कर सकते हैं. फल मक्खी के बचाव हेतु खेत में विभिन्न जगहों पर गुड़ या चीनी के साथ मैलाथियान (0.1%) का घोल बनाकर छोटे कप या किसी और बरतन में रख दें ताकि फल मक्खी का नियंत्रण हो सके.

- मिर्च तथा टमाटर के खेतों में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में दबा दें. यदि प्रकोप अधिक है तो इमिडाक्लोप्रिड / 0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें.
- इस समय सरसों साग, मूली, पालक, शलगम, मेथी, गांठ गोभी तथा धनिया आदि किस्मों की बुवाई मेड़ों पर करें.
- गाजर की बुवाई मेड़ों पर करें. गाजर की बीज दर 4.0 कि.ग्रा. प्रति एकड़ है. बुवाई से पूर्व बीज को केप्टान / 2 ग्रा. प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करें तथा खेत में देसी खाद, पोटाश और फॉस्फोरस उर्वरक अवश्य डालें. गाजर की बुवाई मशीन द्वारा करने से बीज 1.0 किग्रा. प्रति एकड़ की आवश्यकता होती है जिससे बीज की बचत तथा उत्पाद की गुणवत्ता भी अच्छी रहती है.
- यदि सब्जियों में सफेद मक्खी या चूसक कीटों का प्रकोप दिखाई दें तो इमिडाक्लोप्रिड दवाई 1.0 मि. ली./3 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें.
- सब्जियों (मिर्च, बैंगन) में फलछेदक, शीर्षछेदक एवं फूलगोभी व पत्तागोभी में डायमंड बैंक मोथ की निगरानी के लिए फीरोमोन प्रपंच 46 प्रति एकड़ की दर से लगाएं तथा प्रकोप अधिक हो तो स्पेनोसेड दवाई 1.0 मि.ली. / 4 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें.

लहसुन

इस समय लहसुन की बुवाई की जा सकती है. कद्दूवर्गीय फसलों (लौकी, कद्दू, तुरई, टिंडा आदि) के तैयार फलों की तुड़ाई करके बाजार भेजें.

- यह समय ब्रोकली, फूलगोभी, बंदगोभी तथा टमाटर की पौधशाला तैयार करने के लिए उपयुक्त है. पौधशाला भूमि से उठी हुई क्यारियों पर ही बनाएं. जिन किसान भाइयों की पौधशाला तैयार है, वह मौसम को ध्यान में रखते हुए पौध की रोपाई ऊंची मेड़ों पर करें.
- वर्तमान मौसम हरी प्याज की बुवाई के लिए अनुकूल है. इसकी बीज दर 10 किग्रा. प्रति हेक्टेयर है. बुवाई से पहले बीजों को केप्टान / 2.5 ग्रा. प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित अवश्य करें.

फल-फूलों के लिए सलाह

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार पपीते के पौधों के आस-पास यदि जलभराव हो तो जल का तुरंत निकास करें. नींबू के पौधों की आवश्यकता से अधिक बढ़ी हुई और रोगग्रस्त शाखाओं की कटाई-छंटाई कर देनी चाहिए.

- गुलाब के पौधों की कटाई-छंटाई करें. कटाई के बाद बाविस्टीन का लेप आसमान साफ होने पर लगाएं ताकि कवकों का आक्रमण न हो.
- गेंदे की तैयार पौध की मेड़ों पर रोपाई करें.

आलू

आलू की बुवाई के लिए यह समय अनुकूल है. इसलिए आवश्यकतानुसार आलू की किस्मों की बुवाई कर सकते हैं. बुवाई से पूर्व बीजों को मेन्कोजेब / 2.0 ग्रा तथा कार्बेंडाजिम / 1.0 ग्राम प्रति लीटर घोल में प्रति किग्रा. बीज 5 मिनट भिगोकर रखें. उसके उपरांत बुवाई से पूर्व किसी छायादार जगह पर सूखने के लिए रखें.

- भिंडी मिर्च तथा बेलवाली फसलों में माइट, जैसिड़ और होपर की निरंतर निगरानी करते रहें. अधिक माइट पाए जाने पर इथियान 1.5-2.0 मिली./ लीटर पानी तथा जैसिड़ और होपर कीट की रोकथाम के लिए डाईमेथोएट कीटनाशक 2 मिली. / लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें.

एग्रो ALERT

बैंगन व टमाटर का दुश्मन बैक्टीरियल विल्ट

बैंगन एवं टमाटर में लगने वाला बैक्टीरियल विल्ट रोग एक जीवाणु राल्सटोनिया (स्यूडोमोनास) सोलानेसीरम नामक जीवाणु के कारण होता है. इस जीवाणु के कारण 33 पौधों की फैमिली के 200 से अधिक पौधों की प्रजातियों की एक विस्तृत श्रृंखला इस रोग से प्रभावित होती है. सोलानेसी फैमिली के अन्य पौधे जैसे टमाटर, आलू, बैंगन अतिसंवेदनशील पौधों में से हैं.

खतरनाक है यह बैक्टीरिया

रोगजनक रोपण के समय, खेती के माध्यम से या नेमाटोड या कीड़ों द्वारा किए गए घावों के माध्यम से जड़ों में प्रवेश करता है. जड़ उभरने से बने प्राकृतिक घाव भी प्रवेश के बिंदु हैं. बैक्टीरिया संवहनी प्रणाली में बहुगुणित होते हैं. अंतत: बैक्टीरिया कोशिकाओं के कारण भोजन एवं पानी का संचालन बुरी तरह से प्रभावित होता है.

- पौधों के मरने के बाद, सड़ी हुई जड़ों और तनों से जीवाणु मिट्टी में निकल जाते हैं, इसलिए संक्रमित पौधों को तुरंत हटा दें. यह बहते पानी और संक्रमित मिट्टी से आस-पास के क्षेत्रों में फैलता है. मेजबान पौधों की अनुपस्थिति में भी, जीवाणु मिट्टी में लंबे समय तक जीवित रहता है. रोग से ग्रसित खेत में कम से कम 3 वर्षों के लिए टमाटर, मिर्च, बैंगन, आलू, सूरजमुखी इत्यादि को नहीं लगाए. रोगरोधी प्रजातियों को लगाएं. बगीचे के अन्य हिस्सों में प्रसार को कम करने के लिए, जब तक कि संक्रमित क्षेत्र खत्म न हो जाएं और जुताई के बाद यंत्रों को अच्छी तरह से धो लें.
- रोपण से पहले सीडलिंग को ब्लाइटॉक्स 50 की 2 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में एवं स्ट्रेप्टोसाइकिलिन की 1 ग्राम मात्रा को प्रति 3 लीटर पानी के घोल में डुबाकर रोपण करना चाहिए एवं रोग के शुरुआती लक्षणों के दिखाई देते ही इसी घोल से आसपास की मिट्टी को खूब अच्छी तरह से भिगो देना चाहिए. 10 दिन के बाद पुन: दुहराएं.

किसी भी इलाके में बो सकते हैं काटिया गेहूं

एग्रो RESEARCH

किसान अगर काटिया गेहूं की खेती को अपनाते हैं और उसका प्रसंस्करण करते हैं तो उनकी कमाई में काफी इजाफा होगा. इसे गेहूं उगाने वाले किसी भी इलाके में बोया जा सकता है. काठिया गेहूं के लिए समतल उपजाऊ मिट्टी चाहिए. काठिया गेहूं की फसल को 5 से 6 सिंचाई की जरूरत होती है. अगर बीज उपचार, समय पर सिंचाई, रोग प्रबंधन, उचित खाद की मात्रा और वक्त रहते खर-पतवार नियंत्रण किया जाए तो एक हेक्टेयर खेत से आप काठिया गेहूं की 50 से 55 क्विंटल पैदावार हासिल कर सकते हैं.

भंडारण से पहले सुखा दें

कृषि विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि लंबे वक्त तक सुरक्षित रखने के लिए गेहूं को भंडारण से पहले सुखा दें. भंडारण इसलिए भी जरूरी है कि जब बाजार में गेहूं का दाम अच्छा मिले, तब ही किसान बेचने के लिए स्टॉक को निकालें. क्षेत्रीय गेहूं अनुसंधान केंद्र ने काठिया गेहूं को विकसित किया है. काठिया गेहूं का वैज्ञानिक नाम ट्राइटिकम ड्यूरम है. यह किस्म देश की खाद्य सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. बाजार में दूसरी किस्मों के मुकाबले इसका मूल्य भी काफी ज्यादा मिल जाता है. यहीं कारण है कि किसान इसकी खेती की तरफ आकर्षित हो रहे हैं. एचआई-8713 काठिया गेहूं की उन्नत किस्म है.

श्री विधि से बुवाई

गेहूं की बुवाई वर्गाकार विधि से करने पर कतार व पौधों के बीच पर्याप्त दूरी स्थापित रहती है. इससे पौधों की समुचित वृद्धि और विकास अच्छा होता है. इससे उनमें स्वस्थ, कसे तथा पुष्ट बालियों का निर्माण होता है और फलस्वरूप अधिक उपज प्राप्त होती है. इस विधि से खेती करने पर गेहूं की खेती लागत परंपरागत विधि की तुलना में आधी हो जाती है. इस विधि से सामान्य तौर पर गेहूं की बुवाई नवंबर-दिसंबर के मध्य में कर सकते हैं.

तरीका

इस विधि के तहत बीजों को कतार में 20 सेमी की दूरी में लगाएं. आप इसके लिए देसी हल या पतली कुदाली की सहायता ले सकते हैं. इसकी मदद से 20 सेमी की दूरी पर 3 से 4 सेमी गहरी नाली बनाएं, साथ ही उसमें 20 सेमी. की दूरी पर एक स्थान पर 2 बीज डालते रहें. बुवाई के बाद बीज को हल्की मिट्टी से ढंक दें, फिर बुवाई के 2 से 3 दिन में पौधे निकल आते हैं. बता दें कि कतार और बीज के मध्य वर्गाकार (20 बाय 20 सेमी) की दूरी रखने से हर पौधे के लिए पर्याप्त जगह मिल पाती है.

कृषि में बिग डेटा की एंट्री

स्मार्ट होगी खेती

नई पहल

आज डेटा का जमाना है और डेटा का विश्लेषण करके भविष्य की योजनाएं बनाई जा रही हैं. कृषि के क्षेत्र में बिग डेटा की बड़ी भूमिका है और इससे स्मार्ट खेती को प्रोत्साहन मिल रहा है. छोटी-छोटी सूचनाओं के संग्रह को बिग डेटा कहा जाता है. इसे कई माध्यमों से इकट्ठा किया जाता है. ये ऐसी सूचनाएं होती हैं, जिसके जरिए किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में 90 फीसदी सटीकता के साथ अनुमान लगाया जा सकता है.

तकनीक और विश्लेषणों का मेला

आज के डिजिटल दौर में सूचनाएं इकट्ठा करना बहुत आसान हो गया है. कृषि के क्षेत्र में बिग डेटा को तकनीक और विश्लेषणों का मेला कहा जा सकता है. इसमें मिट्टी और फसलों से जुड़ी जानकारी मशीनों से इकट्ठी की जाती है. फिर उस जानकारी का विश्लेषण करके भविष्य की प्लानिंग की जाती है. खेती में बिग डेटा का बहुत बड़ा योगदान है. ये किसानों को बारिश के पैटर्न के बारे में भी बताता है. साथ ही, किस फसल में कौन सा उर्वरक किस फसल में किस समय डालना है, इसकी भी जानकारी देता है. इसी डेटा का विश्लेषण करके किसान जान सकते हैं कि उनके लिए कौन सी फसल की खेती करना फायदेमंद रहेगा.

बीमारियों का पता चलेगा

साथ ही, फसलों में लगने वाली बीमारियों का भी पता लगाया जा सकता है. यह डेटा लोन और बीमा की सुविधा लेने वाले किसानों, लोन बैंक, बीज कंपनियों, बीमा एजेंसियों और मशीन उद्योग के बारे में भी जानकारी उपलब्ध कराता है. कृषि क्षेत्र के लिए बिग डेटा एआई के जरिए हासिल किया जा सकता है. इसके लिए खेतों में इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को लगाने की जरूरत होती है. इसी के माध्यम से किसानों को सिंचाई, खाद और निराई-गुणाई तक की जानकारी मिल जाती है.

समस्याओं का समाधान

आज स्मार्टफोन का जमाना है. इसके जरिए किसानों की समस्याओं का समाधान किया जा रहा है या उन्हें जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है. खेती-किसानी से जुड़े कई ऐप भी किसानों की मदद के लिए आज के समय में मौजूद हैं. अगर बिग डेटा का इस्तेमाल कर इन माध्यमों के जरिए किसानों तक जानकारी पहुंचाई जाए तो काफी लाभ मिल सकता है.

केंद्र सरकार की 2,000-3,000 करोड़ रुपए की योजना

सरकारी PLANNING

पैक्स का होगा डिजिटलीकरण

केंद्रीय सहकारिता मंत्रालय अगले 5 वर्षों में लगभग 2,000-3000 करोड़ रुपए खर्च करके देश भर में फैली 97,000 से ज्यादा प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों (पीएसी) का आधुनिकीकरण और डिजिटलीकरण करेगा. इस योजना पर काम भी शुरू हो गया है. प्राथमिक कृषि सहकारी समितियां (**PACs**) – जिन्हें आमतौर पर कृषि-सहकारी ऋण समितियों के रूप में जाना जाता है – सहकारी सिद्धांतों पर आधारित गांव-स्तरीय ऋण देने वाली संस्थाएं हैं. वे ग्रामीण लोगों को उनकी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लघु और मध्यम अवधि के ऋण प्रदान करते हैं. देशभर में लगभग 97,961 पीएसी हैं, जिनमें से लगभग 65,000 सुचारू से काम कर रही हैं.

बैंकिंग प्रक्रिया को ठीक करने की पहल

सहकारिता मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा है कि हम पीएसी को कम्प्यूटरीकृत करने के लिए एक केंद्रीय योजना पर काम कर रहे हैं. इसका उद्देश्य मुख्यालय तक पंचायत स्तर के पीएसी की निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित करना है. पीएसी के डिजिटलीकरण के बाद, बैंकिंग प्रक्रियाएं सुचारू हो जाएंगी और ऑडिटिंग में लाभ होगा. इसके अलावा यह सुनिश्चित करेगा कि कृषि ऋण का लाभ अंतिम मील तक पहुंचे क्योंकि कुछ राज्यों में कृषि ऋण अभी भी पीएसी के माध्यम से वितरित किया जाता है.

राज्य और केंद्र सरकार वहन करेगी खर्च

कम्प्यूटरीकरण पीएसी को गोदामों की स्थापना जैसे नए व्यवसाय बनाने में भी सक्षम करेगा. चूंकि पीएसी राज्य सरकार के दायरे में हैं, इसलिए यह योजना 5 साल के लिए 60 :40 के आधार पर होगी, कुल बजट 2,000-3,000 करोड़ रुपए होने की उम्मीद है. इससे पहले जब सहकारिता विभाग केंद्रीय कृषि मंत्रालय का हिस्सा था, केवल एक योजना, कृषि सहयोग की एकीकृत योजना (आईएसएसी) – जिसके तहत पीएसी को उनकी पूंजी के बुनियादी ढांचे के उन्नयन के लिए सब्सिडी दी जा रही थी. सहकारिता आंदोलन को मजबूत करने के लिए इस साल जुलाई में एक नए सहकारिता मंत्रालय का गठन किया गया था.

बढ़ेगा उत्पादन, होगा डबल मुनाफा

सही विधि से करें गन्ने की बुवाई

शरदकालीन गन्ने की बुवाई नवंबर तक की जाती है. इस समय गन्ना लगाने से अधिक पैदावार मिलती है, क्योंकि यह समय गन्ने की बुवाई के लिए सर्वोत्तम माना गया है. अगर किसान गन्ने की बुवाई सही विधि से करें तो फसल के उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है, साथ ही लागत भी घटाई जा सकती है.

खेती का तरीका

किसान भाइयों को गन्ने की बुवाई सपाट व फेरों विधि से करनी चाहिए. इसके लिए सबसे पहले खेत को पलेवा देकर तैयार करना होगा. इसके बाद 75 से 90 सेमी. के फासले पर गहरे कुंड निकालने होंगे. ध्यान रहे कि गन्ने की खेती के लिए भूमि भारी व अच्छी उपजाऊ भूमि में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 90 सेमी. रखनी है. वहीं, हल्की एवं कम उपजाऊ भूमि में दूरी 75 सेमी. रखनी है. जिन क्षेत्रों की मिट्टी चिकनी होती है, वहां जमीन भुरभुरी तैयार नहीं हो पाती है, इसलिए इन क्षेत्रों में सूखी मिट्टी में बुवाई करना चाहिए. इसके लिए 75 से 90 सेमी. की दूरी पर गहरे कुंड निकालें, फिर उनमें उर्वरक व भूमि उपचार के लिए औषधि डाल दें. इसके बाद गन्ने के टुकड़ों को ड्योढ़ा यानि तिरछा रखें और पाटा फेरकर तुरंत सिंचाई करें. इसके अलावा खाली स्थानों पर रोपाई के लिए 3 से 4 अतिरिक्त पंक्तिया बोएं. जहां अंकुरण कम है, वहां बुवाई के 25 से 30 दिन बाद एक आंख वाले टुकड़े को निकालकर रोपाई कर दें.

कुंडों में दीमक व कीड़ों की रोकथाम

गन्ने की बुवाई के लिए बनाए गए कुंडों में दीमक व कीड़ों आदि की रोकथाम के लिए कीटनाशक डाल दें. इसके ऊपर से गन्ने के टुकड़ों को ड्योढ़ा मिलकर रख दें, फिर पाटा फेर दें, ताकि टुकड़े मिट्टी में अच्छी तरह ढक जाएं.

सिंचाई

गन्ने की बुवाई के तीसरे सप्ताह में एक सिंचाई कर दें. इसके बाद सावधानी से अंधी गुड़ाई करें. ऐसा करने से मिट्टी की पपड़ी उखड़ जाएगी और अंकुरण अच्छा होगा. ध्यान रहे कि पहली सिंचाई हल्की और समान होनी चाहिए. जब खेत बाह पर आ जाए तो अंधी गुड़ाई करें. इसके 15 से 20 दिन बाद फिर सिंचाई कर गुड़ाई कर दें. इस विधि से अंकुरण अच्छा होगा. इस विधि से गन्ने की बुवाई कर फसल का अच्छा उत्पादन हासिल किया जा सकता है.

कृषि यंत्र

जीरो टिलेज सीड ड्रिल मशीन

अभी गेहूं की बुवाई का समय चल रहा है. अगर किसान खेत की मंहगी जुताई में होने वाली लागत से बचना चाहते हैं और फसल का उत्पादन ज्यादा लेना चाहते हैं तो जीरो टिलेज सीड ड्रिल मशीन का प्रयोग कर सकते हैं. जीरो टिलेज सीड मशीन के जरिए बिना जुताई के खेत में सीधे फसल के बीज और खाद, दोनों एक साथ बो सकते हैं. आमतौर पर किसान कल्टीवेटर से खेत की जुताई करते हैं. अगर खेत में खरपतवार नहीं है, तो इस मशीन के जरिए सीधी बुवाई कर सकते हैं. मशीन में खाद और बीज साथ में डाला जाता है, फिर उतनी जगह खोदी जाती है, जितनी जगह में बीज बोना है, क्योंकि जुताई से खेत की ऊपरी सतह की मिट्टी भुरभुरी हो जाती है. इससे फसल तेज हवा और पानी से गिर जाती है. वहीं, इस तकनीक से बुवाई करने पर फसल गिरने की संभावना कम रहती है. इस मशीन में कम चौड़े हल लगे होते हैं. एक भाग में बीज और दूसरे भाग में खाद डाली जाती है, जो नीचे हल तक पहुंचते हैं. मशीन लगभग 2 से 3 इंच की चौड़ाई में जमीन को खोदती है, उसमें बीज बो दिए जाते हैं. यह मशीन कृषि यंत्र विक्रय केन्द्रों पर मिल जाएगा. इसके अलावा मशीन को किराए पर भी लिया जा सकता है.

फायदे

- इस मशीन से प्रति हेक्टेयर लगभग एक से डेढ़ हजार में जुताई हो जाती है.
- गेहूं की फसल में पूरे सीजन में लगभग 35 सेमी पानी दिया जाता है, जबकि इस प्रयोग के बाद 3 से 4 सेमी कम पानी ही दे सकते हैं.
- एक हेक्टेयर में औसतन 50 कुंतल तक उत्पादन मिल सकता है.
- खेती में जुताई के बाद मिट्टी भुरभुरी हो जाती है और हवा चलने पर गेहूं खेत में बिछ जाता है.

- इस मशीन से बुवाई करने पर मिट्टी की पकड़ कमजोर नहीं होती है.

गाय की इन नस्लों से कमाएं अच्छा मुनाफा

पशुपालन

यदि किसान पशुओं की अच्छी नस्लों के पशुओं का पालन करते हैं, तो उन्हें अच्छा मुनाफा मिल सकता है. गाय की कुछ उन्नत नस्लें हैं, जो पशुपालकों के लिए बेहद लाभकारी है.

अमृत महल

गाय की यह नस्ल आमतौर पर कर्नाटक क्षेत्र में पाई जाती है. गाय की इस नस्ल को अमृत महल को डोड्डादान के नाम से भी जाना जाता है. इस नस्ल की गाय का रंग खाकी होता है. इसका मस्तक और गाल का रंग काला होता है. इस नस्ल की गाय के नथुने कम चौड़े होते हैं, साथ ही दूध उत्पादन क्षमता कम होती है. इस नस्ल की औसतन दूध उत्पादन क्षमता प्रति स्तनपान औसत दूध उपज 572 किलोग्राम है.

बचौर

गाय की इस नस्ल का माथा चौड़ा और सपाट या थोड़ा उत्तल होता है. वहीं, आंखें बड़ी और उभरी होती हैं. इनके सींग मध्यम आकार के और स्टम्पी होते हैं तो वहीं कान मध्यम आकार के और झुके हुए होते हैं. कूबड़ के पीछे एक बैल की ऊंचाई 58-62 इंच और हृदय की माप 68-72 इंच के बीच होती है. पूंछ छोटी और मोटी होती है.

बर्गुर

इस नस्ल की गाय तमिलनाडु के बर्गुर क्षेत्रों में पाई जाती है. इस नस्ल की गायों का सर आमतौर लम्बा होता है. वहीं, पूछ छोटी एवं माथा उभरा हुआ होता है. इस नस्ल के गायों की दूध उत्पादन क्षमता कम होती है.

डांगी

डांगी गाय की यह नस्ल महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश क्षेत्रों में पाई जाती है. गाय की इस नस्ल का रंग काला, सफ़ेद एवं लाल होता है.

गिर

इस नस्ल की हाय को भदावरी, देसन, गुजराती, काठियावाड़ी, सोरथी और सुरती भी कहा जाता है. यह गुजरात में दक्षिण काठियावाड़ के गिर जंगलों में उत्पन्न हुई, जो महाराष्ट्र और राजस्थान में भी पाई जाती है. इनकी त्वचा का मूल रंग गहरा लाल या चॉकलेटी-भूरा होता है. यह कभी-कभी काले या पूरी तरह से लाल भी होती हैं. इनके दुग्ध उत्पादन की क्षमता 1200-1800 किलोग्राम प्रति स्तनपान के बीच होती है.

गओलाओ

गाय की यह नस्ल महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश राज्यों में पाई जाती है. इस नस्ल से रोजाना 470-725 लीटर दूध प्राप्त हो सकता है.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

06

जयपुर >> रविवार, 21 नवम्बर, 2021

एक नज़र

जयपुर स्थापना दिवस

गुलाबी नगर अपने सफ़र की कहानी खुद कहता है...

इसी साल यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल होने वाला जयपुर शहर अपना 294वां स्थापना दिवस मना रहा है। राजस्थान की राजधानी जयपुर शहर आज अपने इतिहास, स्थापत्य कला और खूबसूरती के लिए दुनिया के शीर्ष पर्यटन स्थलों में शुमार है। इसे दुनिया के 10 सबसे खूबसूरत शहरों में भी शामिल किया जाता है। जयपुर के स्थापना दिवस पर आइए जानते हैं इसकी कुछ रोचक बातें।

महाराजा जयसिंह द्वितीय ने 1727 में बसाया था जयपुरः गुलाबी नगरी और पिंक सिटी के नाम से जयपुर शहर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छाप छोड़ता है। 18 नवम्बर 1727 के दिन जयपुर शहर की स्थापना हुई थी। तत्कालीन महाराजा जयसिंह द्वितीय ने इस शहर को बसाया था। इसीलिए इसका नाम जयपुर रखा गया था। नगर नियोजन को ध्यान में रखकर बनाया गया ये देश का पहला शहर हैं। लिहाजा इसे भारत के पेरिस के नाम भी जाना जाता है। करीब तीन सदी से गौरवशाली इतिहास के साथ ढूंढाड़ी विरासत को संभाले जयपुर शहर आज भी दुनिया में अपना खास मुकाम रखता है। भारत आने वाला हर दूसरा विदेशी पर्यटक पिंक सिटी को देखने जरूर जाता है। यहाँ के दरवाज़े, परकोटे, सड़कें, भवन, मंदिर, किले, महल और रास्ते जयपुर की अद्भुत कहानी कहते हैं। गुलाबी रंग से रंगा यह शहर ऐतिहासिक और पौराणिक होने के साथ-साथ आधुनिकता की जीती-जागती मिसाल है। जयपुर शहर विरासत को समेटे हुए अपनी कहानी खुद कहता है।

अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस बेमिसाल

पुरुष अपने समुदाय के लिए और अपने देश के लिए, अपने दोस्तों के लिए और अपने परिवारों के लिए, पति, बेटे और पिता के रूप में, अपनी अनेक भूमिका में प्रत्येक दिन बलिदान करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस समाज में पुरुषों द्वारा किये जा रहे त्याग व बलिदान की सराहना का दिवस है।

'अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस' प्रत्येक वर्ष 19 नवंबर को मनाया जाता है। इस दिवस की स्थापना त्रिनिदाद और टोबैगो में वर्ष 1999 में की गयी। यह दिन दुनिया में 60 से अधिक देशों में मनाया जाता है। भारत में यह दिन सर्वप्रथम 19 नवंबर 2007 को मनाया गया था।

इस दिवस का उद्देश्य, लिंग संबंधों में सुधार, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने, और सकारात्मक पुरुष मॉडल की भूमिका पर प्रकाश डालना है। पुरुषों और लड़कों के स्वास्थ्य पर ध्यान देना इसमें शामिल है। इस दिवस का उद्देश्य पुरुषों के ख़िलाफ़ भेदभाव पर प्रकाश डालना है। इस दिन कई स्थानों पर सार्वजनिक सेमिनार और सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है। कुछ पुरुषों के संगठनों के नेतृत्व में शांतिपूर्ण प्रदर्शन व जुलूस का आयोजन भी होता है।

शेखावाटी की साहित्यकार विमला महरिया बनीं समता साहित्य अकादमी की प्रदेश महासचिव

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। साहित्य सेवा, समाज सेवा पर्यावरण रक्षा खेल कला एवं संस्कृति मानव सेवा की रूचि को देखते हुए समता साहित्य अकादमी ने महरिया को अकादमी की प्रदेश महामंत्री बनाया। समता साहित्य अकादमी के प्रदेशाध्यक्ष द्वारा साहित्यकार विमला महरिया को प्रदेश महामंत्री बनाने पर साहित्य जगत में खुशी की लहर छा गई। उनको प्रदेश महासचिव बनाए जाने पर शुभचिंतकों परिचितों एवं परिजनों ने दी बधाई।

राजस्थान फाउंडेशन की पहल पर दुबई में आयोजित हुआ महाराणा अवार्ड सम्मान समारोह

49 राजस्थानी प्रतिभाओं को अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया गया सम्मान

हिलव्यू समाचार

जयपुर। दुबई के इंडिया क्लब में राजस्थान फाउंडेशन और मारवाड़ी युवा मंच के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित भव्य सम्मान समारोह में 49 राजस्थानी प्रतिभाओं को महाराणा अवार्ड से सम्मानित किया गया। राजस्थान फाउंडेशन के आयुक्त श्री धीरज श्रीवास्तव और फेडरेशन ऑफ राजस्थान एक्सपोर्ट्स के अध्यक्ष श्री राजीव अरोड़ा के मुख्य आतिथ्य में सम्मान समारोह संपन्न हुआ।

देश-दुनिया में अपनी प्रतिभा से राजस्थान को गर्वोन्नत करने वाली प्रतिभाओं को कुल चार श्रेणियों में 'महाराणा अवार्ड' दिये गये। जिसमें 20

प्रतिभाओं को महाराणा आईकोन अवार्ड, 15 प्रतिभाओं को महाराणा उद्यमी अवार्ड, एक प्रतिभा को महाराणा न्यूज अवार्ड में और 13 प्रतिभाओं को महाराणा अचीवर्स अवार्ड में सम्मानित किया गया।

दुनिया में बसे राजस्थानियों को अपनी मातृभूमि के साथ-साथ एक दूसरे से जोड़ना ही हमारा मिशन है: राजस्थान फाउंडेशन के आयुक्त श्री धीरज श्रीवास्तव ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत का एक सपना था कि पूरी दुनिया में बसे प्रवासी राजस्थानी पुनः अपनी धरती से जुड़े तथा अपनी मातृभूमि के विकास में अपनी भागीदारी निभाएं। राजस्थान फाउंडेशन आज उसी सपने को साकार कर रहा है तथा दुनिया में बसे प्रवासी राजस्थानी प्रतिभाओं को महाराणा अवार्ड से सम्मानित करने का यह अवसर हमारे उस मिशन की एक कडी है। उन्होंने बताया कि फाउंडेशन का लगातार यही प्रयास है कि सभी राजस्थानी एक दूसरे से जुड़े हुए महसूस करें। एक परिवार की तरह साथ मिलकर एक दूसरे के काम आए और देश दुनिया में राजस्थान का नाम रोशन करें। श्री धीरज ने बताया कि दुबई एक्सपो के दौरान राजस्थान सरकार के प्रतिनिधि मंडल ने निवेशकों के साथ कई दौर की वार्ताएं आयोजित की। निवेशकों ने राजस्थान के सभी क्षेत्रों में निवेश करने पर खूब जोर दिया और करीब 38000 करोड़ के एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। फेडरेशन ऑफ राजस्थान एक्सपोर्ट के अध्यक्ष श्री राजीव अरोड़ा ने सम्मान समारोह के मौके पर कहा कि राजस्थान फाउंडेशन और मारवाड़ी युवा मंच द्वारा महाराणा अवार्ड के आयोजन की पहल बहुत सराहनीय है। ?से अंतरराष्ट्रीय स्तर के सम्मान समारोह में प्रवासी राजस्थानियों को मिलने वाला यह सम्मान एक दूसरे से जोड़ने में मददगार साबित होगा। डोरी (डॉक्टर्स ऑफ राजस्थान इंटरनेशनल) फाउंडेशन के डॉक्टर रोहित पुरोहित ने बताया कि महाराणा अवार्ड विशेष रूप से उन प्रतिभाओं को दिया गया है जिन्होंने अपने अपने क्षेत्रें में उत्कृष्ट कार्य करके राजस्थान की खुशबू को पूरी दुनिया में फैलाया है।

वर्चुअल काव्य-गोष्ठी सम्पन्न

हिलव्यू समाचार

14 नवम्बर 2021 को दीपावली स्नेह मिलन एवं बाल दिवस के उपलक्ष्य में राजस्थान लेखिका साहित्य संस्थान जयपुर की ओर से काव्य गोष्ठी आयोजित की गई। काव्य गोष्ठी संस्थान की अध्यक्ष जयश्री के सान्निध्य में, डॉ सुषमा शर्मा की अध्यक्षता में व सुधीर के संरक्षण में संपन्न हुई। काव्य गोष्ठी की मुख्य अतिथि डॉ रेखा गुप्ता रहीं। संस्थान की सदस्य रेनू शर्मा ने संस्थान को सदा नई ऊंचाइयां प्रदान की है।

सरस्वती आराधना कर मंजुलता भट्ट ने काव्य गोष्ठी का आगाज़ किया। आयोजित काव्य गोष्ठी की प्रतिभागी सदस्य सुशीला शर्मा, रमा भाटी, अंजु सक्सैना, जीनस कँवर, कमलेश शर्मा, ऊषा नागिया, आरती भदौरिया, सलौनी रस्तोगी, शशि सक्सैना, उमेश नाग, अर्चना माथुर ने अपनी काव्य रचनाएँ पढ़ीं। कुछ रचनाएँ बाल दिवस पर, कुछ रचनाएँ दीपावली पर्व पर और कुछ रचनाएँ देव उठनी ग्यारस के पावन पर्व पर सुनाई गईं।

काव्य गोष्ठी का संचालन की ज्ञानवती सक्सैना ' ज्ञान' ने किया।

संस्थान की अध्यक्ष डॉ जयश्री शर्मा ने आभार अभिव्यक्त किया एवं दीपावली की अनन्त शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

शहर में बढ़ रहे है कोरोना के मामले

स्कूल सरकार की एसओपी का गलत फायदा उठा अभिभावकों पर बना रहे है दबाव

संयुक्त अभिभावक संघ की मांग, राज्य सरकार स्कूलो को ऑनलाइन चलाने के दे निर्देश, दिया 7 दिन का अल्टीमेटम

जयपुर। राज्य सरकार के आदेश के बाद सोमवार से प्रदेश में शतप्रतिशत कैपेसिटी के साथ स्कूल खुलने के साथ ही स्कूलो के अंदर कोरोना के मामले सामने आने लगे है। सोमवार को पहले ही दिन जयपुर शहर के सबसे प्रतिष्ठित स्कूलो में शुमार एसएमएस स्कूल के अंदर 2 छात्र कोरोना पॉजिटिव पाए जाने के बाद अभिभावकों में हड़कंप मच गया है। संयुक्त अभिभावक संघ ने एसएमएस स्कूल में कोरोना के मामले सामने आने बाद कहा कि 'प्रदेश में दीपावली के बाद से लगातार कोरोना के मामले बढ़ रहे है, राज्य सरकार ने शतप्रतिशत कैपेसिटी के साथ स्कूल खोलने की एसओपी जारी कर अभिभावकों और बच्चों के की जिंदगी के साथ खिलवाड़ करने के साथ - साथ प्रदेशभर के नागरिकों के जीवन से भी खिलवाड़ करने की साजिश रची है। संयुक्त अभिभावक संघ राजस्थान सरकार से मांग करता है कि वह शतप्रतिशत कैपेसिटी के साथ स्कूलो को खोलने के निर्देश को वापस लेंवे और ऑनलाइन क्लास चलाने के निर्देश सभी स्कूलो को देंवे। प्रदेश प्रवक्ता अभिषेक जैन बिट्टू ने राज्य सरकार से कोरोना और डेंगू से बच्चों व अभिभावकों को सुरक्षित रखने के लिए चेता रहे है साथ ही स्कूलो की हठधर्मिता पर भी लगातार शिकायत दर्ज करवा रहे है। उसके बावजूद निजी स्कूलों ने राज्य सरकार की एसओपी का गलत इस्तेमाल कर अभिभावकों पर आंतक मचाया हुआ है। साथ ही राज्य सरकार ने भी शतप्रतिशत स्कूलो को खोलने के आदेश में स्थिति बिल्कुल भी स्पष्ट नही की हुई है, जिसका फायदा उठा निजी स्कूल संचालक अभिभावकों और छात्रों पर ऑफलाइन क्लास ने शामिल होने का अनैतिक दबाव बना रहे है। अभी जयश्री पेड़ीवाल स्कूल, विद्या आश्रम स्कूल, एमजीडी स्कूल, एमपीएस स्कूल, ज्ञान आश्रम, सीडलिंग स्कूल स्कूल सहित अन्य स्कूलो ने पूरी तरह से ऑनलाइन क्लास बन्द कर दी है और अब अभिभावकों पर दबाव बना रहे है कि बच्चों को पढ़ाना है तो ऑफलाइन क्लास अटेंड करवाये। स्कूलो की हठधर्मिता को देखकर संयुक्त अभिभावक संघ राज्य सरकार से अभिभावकों को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनो ऑप्शन उपलब्ध करवाए जाने की मांग करता है। 7 दिनों में सरकार ने इस विषय पर कोई कार्यवाही नही की तो मजबूरन अभिभावकों को दुबारा सड़कों पर आना पड़ेगा।

सरकार ने शतप्रतिशत स्कूलों को खोलने की इजाजत दी है, आदेश का गलत मतलब ना निकाल हठधर्मिता ना दिखाए

स्कूल संचालकः संघ प्रदेश अध्यक्ष अरविंद अग्रवाल ने निजी स्कूलों पर एसओपी का गलत मतलब निकाल अभिभावकों को जबरन प्रताड़ित करने का आरोप लगाया। अरविंद अग्रवाल ने कहा कि राज्य सरकार ने शतप्रतिशत केपेसिटी के साथ स्कूलों को खोलने की इजाजत दी है, ऑनलाइन और ऑफलाइन को लेकर एसओपी में कोई स्थान नही है।

अब डिग्गी पैलेस में नहीं क्लार्क्स आमेर में होगा जेएलएफ

28 जनवरी से शुरुआत, वीर सावरकर पर किताब लिखने वाले विक्रम संपत समेत 250 स्पीकर्स आएंगे

जयपुर। साहित्य का महाकुंभ जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल 15 साल बाद पहली बार डिग्गी पैलेस के बजाय अब होटल् क्लार्क्स आमेर में होगा। इस बार फेस्टिवल को दो रूपों में किया जाएगा। क्लार्क्स आमेर में 28 जनवरी से 1 फरवरी तक और हाइब्रिड रूप में यानी वर्चुअल 28 जनवरी से 6 फरवरी तक होगा। कोरोना के बाद पहली बार जेएलएफ का रूप पूरी तरह बदल दिया गया है। पिछले वर्ष ऑनग्राउंड आयोजन के बजाय वर्चुअल आयोजन ही किया गया था। इस आयोजन में इस बार सावरकर पर किताब लिखने वाले इतिहासकार विक्रम संपत भी आकर्षण के केंद्र में रहेंगे।

इसलिए बदला वेन्यू

पिछले 15 साल से जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल शहर के डिग्गी पैलेस में आयोजित किया जाता रहा है, लेकिन इस बार जेएलएफ का आयोजन पहली बार शहर के होटल क्लार्क्स आमेर में किया जाएगा। असल में डिग्गी पैलेस के स्थान को लेकर पिछले कुछ सालों से विवाद चल रहा था। टोंक रोड पर वाहनो की रेलमपेल, आवाजाही में आने वाली दिक्कत, पास ही एसएमएस अस्पताल सहित अन्य अस्पतालों-लैब में आने वाले मरीजों के लिए दिक्कत समेत कई परेशानी इस विवाद का कारण रही हैं। हाईप्रोफाइल आयोजन होने के कारण लंबे समय तक यह स्थान बदला नहीं गया। पिछली बार प्रशासन पर खास दबाव रहा, ऐसे में इस बार आयोजकों ने वेन्यू बदल दिया है। जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल की को-डायरेक्टर नमिता गोखले ने कहा की जेएलएफ की ऑन-ग्राउंड फेस्टिवल की वापसी के साथ ही बेमिसाल वर्चुअल वर्जन का भी आयोजन किया जाएगा। हम तहेदिल से साहित्य-प्रेमियों और साहित्य से जुड़े मित्रों का स्वागत करने के लिए तैयार हैं। ऑन-ग्राउंड फेस्टिवल के उत्साह और चर्चाओं को आगे बढ़ाते हुए हम डिजिटल के माध्यम से इस अनुभव को समय और बॉर्डर की सीमा से परे ले जाएंगे। फेस्टिवल के साथ ही इसकी BwB इकाई, जयपुर बुकमार्क (JBM) के नवें संस्करण का भी आगाज़ किया जायेगा। JBM में हमेशा की तरह ही दुनिया भर के प्रकाशक, लिटरेरी एजेंट्स, लेखक, अनुवादक, अनुवाद एजेंसी और पुस्तक विक्रेता हिस्सा लेंगे, जहाँ उन्हें एक-दूसरे से बात करने और प्रकाशन की संभावनाओं को समझने का अवसर मिलेगा।

250 स्पीकर्स होंगे शामिल

10 दिन तक हाइब्रिड मोड पर चलने वाले इस फेस्टिवल में 250 स्पीकर्स शामिल होंगे जिनमें भारतीय कवयित्री और लेखिका अरुंधति सुब्रमनियम, सर्जन, लेखक डॉ. अम्बरीश सात्विक, कला इतिहासकार बी.एन. गोस्वामी, पुर्तगाली राजनीतिज्ञ ब्रूनो मार्केज, जीव पुरातत्ववेत्ता और वाइकिंग युग के विशेषज्ञ डॉ. कैट जर्मन, उपन्यास 'द प्रॉमिस' के लिए 2021 का बुकर प्राइज जीतने वाले डेमों गेल्गुट, ऑस्ट्रेलियाई लेखक डीबीसी पिएरे, भारतीय मूल के ब्रिटिश लेखक फार्रुख डोंडी शामिल है। वहीं लिस्ट में नेशनल बुक अवार्ड विजेता जोनाथन फ्रेंजें, लेखक कुणाल बासु, लेखिका मुकुलिका बनर्जी, राजनीतिज्ञ डॉ. शशि थरूर,लेखिका शिवानी सिब्बल,लेखक त्रिपुरदमन सिंह, इतिहासकार और लेखक विक्रम संपत भी शामिल है।

एसआर कल्ला हॉस्पिटल में हुए इस दुर्लभ मामले में डॉक्टर्स ने प्रदेश में इस तरह का पहला मामला होने का दावा किया

भोजन नली में छेद से फेफड़े में जा रहा था खाना, बिना सर्जरी किया ठीक

प्रदेश में पहली बार एंडोस्कोपी से ही भोजन नली का छेद बंद कर मरीज की जान बचाई

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। भोजन नली में छेद होने के कारण फेफड़े में खाना भरने से आफत में मरीज की जान को शहर के डॉक्टर्स ने बचा लिया। समस्या के इलाज के लिए मरीज की बड़ी सर्जरी होनी थी लेकिन डॉक्टरों ने उसे बिना सर्जरी के ठीक किया, साथ ही उसे नया जीवन दिया। शहर के एसआर कल्ला मेमोरियल हॉस्पिटल में हुए इस दुर्लभ मामले में डॉक्टर्स ने प्रदेश में इस तरह का पहला मामला होने का दावा किया है। अस्पताल के डायरेक्टर और सीनियर गेस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट डॉ. मुकेश कल्ला ने वस्कुलर प्लग एंड ग्लू तकनीक से यह जटिल केस सफलतापूर्वक किया।

दाएं फेफड़े में जमा हो रहा था खानाः डॉ. मुकेश कल्ला ने बताया कि बिहार के रहने वाले 38 साल के सतीश (परिवर्तित नाम) को अत्याधिक उल्टियां आने के कारण भोजन नली में रिसाव हो गया था। स्थानीय अस्पताल में जांच कराने पर सामने आया कि मरीज जो कुछ खाता था, वह उसके दाएं फेफड़े में जमा हो रहा था। इसके कारण मरीज को सांस लेने में भी तकलीफ हो रही थी। ऐसे में डॉक्टर्स ने उसके फेफड़े में नली डालकर अंदर जमे भोजन को निकाला और उसे नाक में ट्यूब के जरिए खाना देना शुरू किया। डॉक्टर्स ने इसका इलाज सिर्फ सर्जरी से सं भव बताया जिसमें आंत का हिस्सा भोजन नली में लगाकर छेद को बंद किया जा सकता था। लेकिन मरीज की शारीरिक स्थिति बेहद कमजोर थी, जिसके कारण वह सर्जरी झेल पाने में असक्षम था।

नई तकनीक से बिना सर्जरी बंद किया छेद

मरीज ने जब यहां हॉस्पिटल में संपर्क किया तो डॉक्टर्स ने इसे बिना सर्जरी के ठीक करने का निर्णय लिया। इसके लिए डॉ. मुकेश कल्ला ने वस्कुलर प्लग विद ग्लू तकनीक से मरीज की भोजन नली के छेद को बंद किया। उन्होंने बताया कि आमतौर पर यह प्लग धमनियों में लगाए जाते हैं लेकिन इसका इस्तेमाल भोजन नली में पहली बार किया गया है जोकि सफल रहा। वस्कुलर प्लग इंप्लांट होने के बाद मरीज बिना ट्यूब के सीधे मुंह से खाना खा पा रहा है और उसके फेफड़े का रिसाव भी बिल्कुल ठीक हो गया है। इस केस में सर्जरी होने के बाद भी मरीज जीवन भर परेशानी में रहते है क्योंकि भोजन नली की जगह बड़ी आंत लगा दी जाती है। इस केस में सर्जरी से जुड़े सभी जोखिम नहीं रहे। केस में डॉक्टर पंकज डॉ. निखिल, डॉ. आलोक और डॉ. अनंत और इंटरवेंशनल रेडियोलॉजिस्ट डॉ. अमोल और डॉ. मनीष का भी खास सहयोग रहा।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**

रिश्ते की मिठास से अंजान आज के बच्चे

दादा-दादी के बिना अधूरा-सा लगता है बचपन

दादी-नानी संस्कारों की खान होती हैं. ये लोग एक माध्यम होते हैं, जो सशक्त तरीके से वर्तमान और भविष्य को थामे हुए हैं. जैसे-जैसे समय बदलता गया, इस रिश्ते में भी बदलाव आते गए. दादी-नानी नाम के इस वृक्ष के मायने भी बदलने लगे. अगर देखा जाए तो इस वृक्ष की घनी छांव के बिना जीना मुश्किल है, पर आज ऐसे कई बच्चे हैं जो दादा-दादी या नाना-नानी के बिना अपना बचपन बिता रहे हैं. इस मीठे से रिश्ते की मिठास से अनभिज्ञ हैं. इसका कारण कई तरह के सामाजिक बदलाव हैं. संयुक्त परिवार टूटे, फिर एकल परिवार आए और आज एकल परिवार भी बहुत कम देखने को मिलते हैं क्योंकि आजकल न्युक्लियर फैमिली का चलन है अर्थात ऐसा परिवार, जिसमें सिर्फ पैरेंट्स और बच्चे ही होते हैं. दादी-नानी से आपके बचपन की हर छोटी-बड़ी यादें जुड़ी होती हैं. दादा-दादी और नाना-नानी के बिना बचपन अधूरा-सा लगता है. उनकी सुनाई हुई कहानियों में जीवन के सबक मिलते हैं. उनके साथ खेले गए खेलों में जीवन जीने की कला छिपी होती है. याद करें, खुद छड़ी का सहारा लेकर चलनेवाले दादा ने कई बार आपको खेलते समय गिरने से बचाया होगा. कई बार दादी-नानी ने अपनी बूढ़ी कमजोर आंखों से आपको कहानियां पढ़कर सुनाई होंगी. पाश्चात्य संस्कृति में चाहे इस रिश्ते को जनरेशन गैप के नजरिए से देखा जाता हो, पर हमारे समाज में दादी-नानी को बच्चों की पहली पाठशाला माना जाता है.

जीवन का सबक

जानकार मानते हैं कि बच्चे देखकर सीखते हैं, खासकर बात जब जीवन के सबक की हो, जो किसी किताब में नहीं मिलता. आप एक पल के लिए खुद ही सोचकर देखें कि आपको भगवान के सामने हाथ जोड़ने की आदत किससे लगी? आपको बड़ों का सम्मान और छोटों से प्यार करने की सीख किसने दी? आपने रिश्तों के मायने और उनकी गरिमा के बारे में किससे सीख ली? आपको रीति-रिवाजों और अपनी संस्कृति का ज्ञान कहां से मिला? आपको एक ही उत्तर मिलेगा और वह है आपके दादा-दादी या नाना-नानी से. इन सबके अलावा दादा-दादी और नाना-नानी परिवार को पूर्णता का एहसास कराते हैं.

अनुभूति का विषय

दादा-दादी और पोते-पोतियों का रिश्ता चर्चा का विषय न होकर अनुभूति का विषय है, क्योंकि इसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है. यह सच है कि बच्चे अपने पैरेंट्स की बजाय अपने ग्रैंड पैरेंट्स के ज्यादा करीब होते हैं. ग्रैंड पैरेंट्स होना बहुत ही जिम्मेदारी का काम होता है. उनका काम बच्चों को प्यार देना या उनकी हर अच्छी-बुरी इच्छाओं को पूरा करना ही नहीं है, इससे बच्चे बिगड़ जाएंगे. वे बच्चों का साथ तभी दें, जब वे सही हों. उन्हें बताएं कि क्या सही है और क्या गलत! उन्हें अनुशासित करें. बच्चे खाली स्लेट के समान हैं. उस पर क्या लिखना है, यह आपको तय करना है.

संस्कृति का अभिन्न हिस्सा

दादा-दादी हमारे घर-परिवार व संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं और हमेशा रहेंगे. बच्चे बैठाकर सिखाने से नहीं सीखते. वे वैसा ही आचरण करते हैं, जैसा बड़ों को करते हुए देखते हैं. आप उन चीजों की अपेक्षा बच्चों से नहीं कर सकते, जो आप खुद नहीं करते और यह बात दादा-दादी बहुत अच्छे से जानते हैं. यह रिश्ता बहुत ही प्यारा और अनमोल होता है. बच्चे के लिए भी और दादा-दादी के लिए भी. वे अपने पोते-पोतियों में एक बार फिर अपना बचपन देखते हैं और अपने बचपन को फिर से एक बार जीते हैं. आज जाने-अनजाने इस रिश्ते में कई सारे बदलाव और कुछ दूरियां भी आई हैं, जिसका सीधा असर बच्चों के बचपन और भविष्य में उनके व्यक्तित्व पर पड़ रहा है. कहीं न कहीं वे अकेले भी होते जा रहे हैं.

नैतिक ज्ञान की कमी

आज बच्चों को कई तरह के एक्सपोजर मिल रहे हैं, पर उस एक्सपोजर का उपयोग किस तरह किया जाए, इसके लिए उनके पास मॉरल नॉलेज मतलब नैतिक ज्ञान नहीं है. ऐसे में कभी-कभी बच्चे भटक जाते हैं. यह ज्ञान या तो उन्हें पैरेंट्स से मिलता है या फिर इसके सबसे अच्छे स्रोत हैं हमारे बुजुर्ग. इन दो पीढ़ियों का तालमेल काफी अच्छा होता है. बच्चे बुजुर्गों की बातें काफी जल्दी समझ जाते हैं. इसका कारण है बुजुर्गों का अनुभव. साथ ही देखा जाए, तो हर उम्रदराज व्यक्ति में कहीं न कहीं एक बच्चा छुपा होता है. एक भरे-पूरे परिवार में रहनेवाला बच्चा ज्यादा आत्मविश्वासी और भावनाओं के स्तर पर संतुलित रहता है.

समस्या से ग्रस्त रिश्ता

यदि आज कहीं पर भी दादा-दादी और पोते-पोतियों का रिश्ता इस समस्या से ग्रस्त है तो इसके लिए काफी हद तक जिम्मेदार हम ही हैं, क्योंकि हम बड़े हैं. बच्चों से ऐसी अपेक्षाएं रखना ही गलत है. आप यदि दादा-दादी होने के नाम पर संस्कारों और विचारों की पूरी गठरी बच्चों के सिर पर रख देंगे, तो वे उसे उतारकर फेंक देंगे. आज की पीढ़ी की तुलना हम अपने समय से नहीं कर सकते. आज बच्चे अत्याधुनिक जानकारियों से लैस हैं. उस हिसाब से आज दादा-दादी को भी खुद को बदलना पड़ेगा. किसी भी उम्र के बच्चे अपने ऊपर थोपी गई चीजों को ग्रहण नहीं करते. ग्रैंड पैरेंट्स को किसी चीज को उन्हें समझाने के लिए पहले खुद उनकी उम्र का बनना पड़ेगा. फिर आप खेल-खेल में और उनकी भाषा में उन्हें अपनी बातें बताएं, वे जरूर समझ जाएंगे.

प्रेम और अपनापन

बच्चों की अच्छी परवरिश या तो पैरेंट्स कर सकते हैं या उनकी अनुपस्थिति में ग्रैंड पैरेंट्स. आज माता-पिता दोनों ही वर्किंग हैं, ऐसे में बच्चों को नौकरानी या आया के हवाले करके जाना या किसी क्रेच में रखना उनकी मजबूरी है. पर अगर घर में दादा-दादी या नाना-नानी हैं, तो पैरेंट्स की अनुपस्थिति में भी उनको प्रेम और अपनेपन की कोई कमी नहीं होगी, जो उनके बचपन से अकेलेपन को दूर करेगा और उनमें आत्मविश्वास भी जगाएगा. आज दादा-दादी की जिम्मेदारी सिर्फ कहानियां सुनाने तक ही सीमित नहीं रह गई है.

सोशल STAR 48 वर्षीया ऐश्वर्या की ख़ूबसूरती लाजवाब

बढ़ती उम्र के साथ ज्यादा स्टाइलिश

एक्ट्रेस और पूर्व मिस वर्ल्ड 48 साल की ऐश्वर्या राय बच्चन की ख़ूबसूरती भी उनकी उम्र के साथ दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है. साथ ही वो पहले से ज्यादा फैशनेबल और स्टाइलिश होती जा रही हैं.

ब्लैक कलर से है लगाव

ऐश्वर्या को ब्लैक रंग से लगाव है और इस बात में कोई शक नहीं है कि वो ब्लैक कपड़ों में शानदार लगती हैं. ऐश्वर्या कहती हैं, ब्लैक में ख़ूबसूरती निखरती है लेकिन खासकर शाम की पार्टियों में ब्लैक और गोल्डन प्रेटी लुक देता है.

डिफरेंट स्टाइल ऑफ फैशन

ऐश्वर्या को अलग-अलग ओकेजन के हिसाब से कपड़े पहनना उन्हें पसंद है. उनकी स्टाइलिस्ट के अनुसार, अगर ऐश किसी बड़े फैशन इवेंट का हिस्सा बनती हैं तो वो क्लासी कपड़े पहनना पसंद करती हैं. जब वो कान्स जैसे किसी फंक्शन का हिस्सा बनती हैं तो उनकी स्टाइल एकदम डिफरेंट होती है. अगर बात करें इंडियन अवॉर्ड फंक्शन्स की, तो ऐसे मौके पर वो साड़ी, लहंगा या फिटेड इवनिंग गाउन पहनना प्रिफर करती हैं.

एक्सपेरिमेंट करने से हो जाती हैं नर्वस

ऐश्वर्या हमेशा क्लासी कपड़े पहनना पसंद करती हैं और नये एक्सपेरिमेंट करने से नर्वस हो जाती हैं. इस बात में कोई शक नहीं है कि ऐश दुनिया के सबसे फैशनेबल सेलेब्स में से एक हैं, लेकिन वो अपने लुक के साथ नये-नये एक्सपेरिमेंट कभी नहीं करतीं.

वॉर्डरोब में 5 चीजें

ऐश्वर्या के वॉर्डरोब में क्लासिक वेल फिटेड जैकेट, डेनिम जीन्स, शूज-वेजेस और स्टिलटोज, ब्लैक ड्रेस और चिकनकारी कुर्तों का कलेक्शन होता है जो उन्हें काफी पसंद है.

फोन में बुजुर्ग के लिए कई फीचर्स

हार्ट रेट बताएगा F60 5G

Hisense ने अपना नया 5G स्मार्टफोन F60 5G लांच किया है. ऐसा लगता है कि कंपनी का ये नया प्रोडक्ट बुजुर्ग लोगों को ध्यान में रखकर बनाया गया है. इसमें बुजुर्गों के लिए कई उपयुक्त फीचर्स हैं. स्मार्टफोन के फीचर्स में फैमिली प्रोटेक्शन, हेल्थ प्रोटेक्शन, मिनिमल इंटरैक्शन और एनजॉयमेंट ऑफ लाइफ शामिल है. कंपनी ने मनोरंजन कोटा पूरा करने के लिए बुजुर्ग लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले लोकप्रिय एप्स एकत्र किए और गैर-सुरक्षित एप्स इंस्टॉल करने की संभावना को भी कम कर दिया.

फैमिली प्रोटेक्शन

फोन में फैमिली गार्ड फीचर है जिसमें 4 प्रमुख विशेषताएं शामिल हैं - वॉयस बेस्ड कम्युनिकेशन के लिए रिमोट असिस्टेंट, सेफ रेंज एक्टिविटी के लिए इलेक्ट्रॉनिक फैंस, इमरजेंसी के लिए वन-की SOS और फॉल डिटेक्शन सेंसर शामिल है.

हेल्थ गार्ड

हेल्थ गार्ड फीचर के लिए, फोन शरीर के तापमान मापने वाले सेंसर, हार्ट रेट मॉनिटरिंग और ब्लड-ऑक्सीजन लेवल जैसे फीचर्स के साथ आता है, जो बुजुर्ग लोगों को अपने स्वास्थ्य की निगरानी करने की अनुमति देगा. इसके अलावा, कंपनी का हेल्थ एनालिसिस एल्गोरिथम हृदय रोग के जोखिम को कम करने के लिए स्वास्थ्य मूल्यांकन परिणाम प्रदान करता है. स्मार्टफोन में 6.81 इंच का फुल एचडी + डिस्प्ले है और यह क्वालकॉम स्नैपड्रैगन ऑक्टा-कोर प्रोसेसर द्वारा संचालित है जिसमें 8GB तक रैम और 256GB की इंटरनल स्टोरेज है. डिवाइस एंड्रॉइड ऑपरेटिंग सिस्टम पर चलता है और इसमें 5000mAh की बैटरी है जो 30W फास्ट चार्जिंग तकनीक को सपोर्ट करती है. फोन में पीछे की तरफ ट्रिपल-कैमरा सेटअप है जिसमें 48-मेगापिक्सल का प्राइमरी सेंसर, 2-मेगापिक्सल का कैमरा सेंसर और 2-मेगापिक्सल का मैक्रो लेंस शामिल है. फ्रंट-फेसिंग 16-मेगापिक्सल कैमरा सेंसर एक पंच-होल कटआउट के अंदर रखा गया है. डिवाइस एक न्यूनतम और इंटरैक्टिव यूजर इंटरफेस के साथ आती है, जो अधिक सहज आइकन और बड़े फांट के साथ सिस्टम इंफॉर्मेशन डेंसिटी और मेनू डेप्थ को कम करती है.

ज्ञानकथा

मन चंगा तो कठौती में गंगा

एक वृद्धा के मन में अंतिम समय में नर्मदा-स्नान की चाह हुई. लोगों ने बता दिया कि नर्मदाजी अमुक दिशा में कोसों दूर बहती हैं, तुम नहीं जा पाओगी. वृद्धा न मानी, भगवान का नाम लेकर चल पड़ी. कई दिनों के बाद उसे एक नदी मिली. उसने 'नरमदा तो ऐसी मिलीं रे जैसे मिल गै मतारे और बाप रे' गाते हुए परम संतोष से डुबकी लगाई. कुछ दिन बाद साधुओं का एक दल आया. शिष्यों ने वृद्धा की खिल्ली उड़ाते हुए बताया कि यह तो नाला है, नर्मदाजी तो दूर हैं, हम वहां से नहाकर आ रहे हैं. वृद्धा बहुत उदास हुई. बात गुरुजी तक पहुंची. गुरुजी ने सब कुछ जानने के बाद, वृद्धा के चरण स्पर्श कर कहा- 'जिसने भाव के साथ इतने दिन नर्मदाजी में नहाया, उसके लिए मैया यहां न आ सकें, इतनी निर्बल नहीं हैं. मैया तुम्हें नर्मदा-स्नान का पुण्य है लेकिन जो नर्मदाजी तक जाकर भी भाव का अभाव मिटा नहीं पाया, उसे नर्मदा-स्नान का पुण्य नहीं है. मैया! तुम कहीं मत जाओ, मां नर्मदा वहीं हैं, जहां तुम हो.' 'कंकर-कंकर में शंकर', 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' का सत्य भी ऐसा ही है. 'भाव का भूखा है भगवान' जैसी लोकोक्ति इसी सत्य की स्वीकृति है. जिसने इस सत्य को गह लिया, उसके लिए 'हर दिन होली, रात दिवाली' हो जाती है.

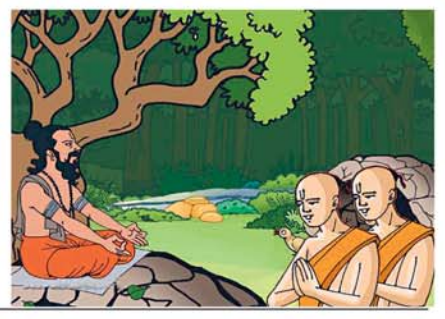

का सदुपयोग

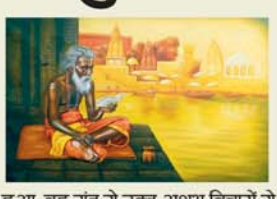

एक धनवान व्यक्ति था, जो बड़ा विलासी था. हर समय उसके मन में भोग-विलास, सुरा-सुंदरी के विचार ही छाए रहते थे. वह खुद भी इन विचारों से त्रस्त था. पर आदत से लाचार, वे विचार उसे छोड़ ही नहीं रहे थे. एक दिन आचानक किसी संत से उसका सम्पर्क हुआ. वह संत से उक्त अशुभ विचारों से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना करने लगा. संत ने कहा अच्छा, अपना हाथ दिखाओ! हाथ देखकर संत भी चिंता में पड़ गए. संत बोले, बुरे विचारों से मैं तुम्हारा पिंड तो छुड़ा देता, पर तुम्हारे पास समय बहुत ही कम है. आज से ठीक एक माह बाद तुम्हारी मृत्यु निश्चित है, इतने कम समय में तुम्हें कुत्सित विचारों से निजात कैसे दिला सकता हूं' और फिर तुम्हें भी तो तुम्हारी तैयारियां करनी होंगी.

वह व्यक्ति चिंता में डूब गया और सोचने लगा, अब क्या होगा! चलो समय रहते यह मालूम तो हुआ कि मेरे पास समय कम है. वह घर और व्यवसाय को व्यवस्थित व नियोजित करने में लग गया. परलोक के लिए पुण्य अर्जन की योजनाएं बनाने लगा कि कदाचित परलोक हो तो पुण्य काम आएगा. वह सभी से अच्छा व्यवहार करने लगा. जब एक दिन शेष रहा तो उसने विचार किया, चलो एक बार संत के दर्शन कर लें. संत ने देखते ही कहा, 'बड़े शांत नजर आ रहे हो, जबकि मात्र एक दिन शेष है!' अच्छा बताओ क्या इस अवधि में कोई सुरा-सुंदरी की योजना बनी? व्यक्ति का उत्तर था, महाराज! जब मृत्यु समक्ष हो तो विलास कैसा? संत हंस दिए और कहा, वत्स! अशुभ चिंतन से दूर रहने का मात्र एक ही उपाय है- "मृत्यु निश्चित है, यह चिंतन सदैव सम्मुख रखना चाहिए और उसी ध्येय से प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना चाहिए."

बोधकथा

105 साल की पद्मश्री पप्पाम्मल

देश की सबसे पुरानी किसान

सीनियर INSPIRATION

पद्मश्री पप्पाम्मल को देश की सबसे पुरानी किसान माना जाता है. उनकी उम्र 105 साल है. वह रासायनिक खेती नहीं करतीं, बल्कि स्वयं खाद बनाकर जैविक खेती करती हैं. वह सुबह 4 बजे उठती हैं, साढ़े पांच बजे तक तैयार हो जाती हैं और अपने खेत में पहुंच जाती हैं. फिर पूरा दिन अपने खेतों की फसलों के लिए समर्पित कर देती हैं. उनकी उम्र को उनकी मेहनत का पैमाना न समझें. वह एक बुजुर्ग हैं, लेकिन वह अभी भी पूरी हिम्मत और लगन के साथ खेती में सक्रिय हैं. पप्पाम्मल का जन्म देश की आजादी से करीब 33 साल पहले, वर्ष 1914 में देवलपुरम कोयंबटूर तमिलनाडु में हुआ था. वह कभी स्कूल नहीं गईं. उन्होंने जो कुछ भी गुणा-भाग या गिनती सीखी, वह खेल के माध्यम से सीखा.

2.5 एकड़ में करती हैं जैविक खेती

पप्पाम्मल 2.5 एकड़ में जैविक खेती करती हैं. उनके फॉर्म से 2 किलोमीटर दूर भवानी नदी बहती है. वह दालें, सब्जियां, बाजरा और रागी की खेती करती हैं. वह खेती के साथ थेक्कमपट्टी में ही एक दुकान भी चलाती हैं. यहां वह अपने खेत में उगाए गए जैविक उत्पाद बेचती हैं. कृषि के बारे में उनकी समझ यूं ही नहीं हो गई, ये बदलाव साल 1983 से आने लगे थे. वह कोयंबटूर जिले में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) में शामिल हुईं जो अविनाशीलिंगम महिला गृह विज्ञान संस्थान के तत्वावधान में संचालित किया गया था. यहां उन्होंने जैविक खेती और खेती की बारीकियों के बारे में जाना. कहा जा सकता है कि उन्होंने लैब के काम को धरातल पर साबित कर दिया. ऑन-फील्ड प्रशिक्षण ने उन्हें खेती की छोटी-छोटी बारीकियां सिखाईं. बुनियादी प्रशिक्षण लेने के बाद, वह केवीके की स्थानीय प्रबंधन समिति में नेता बन गईं. उन्होंने नेता बनकर गांव की अन्य महिलाओं को खेती से जोड़ा. कुछ समय बाद स्थानीय प्रबंधन समिति वैज्ञानिक सलाहकार समिति (SAC) बन गई. पप्पाम्मल इसकी सदस्य थीं. वह लड़की, जो कभी स्कूल नहीं गई थी, अब वैज्ञानिक सलाहकार समिति की सदस्य थी. वह कई सेमिनारों और सम्मेलनों में भाग लेती हैं. यहां वह किसानों और आम लोगों को जैविक खेती की तकनीकों और लाभों के बारे में बताती हैं. उन्होंने तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के भी साथ मिलकर काम किया. वह विश्वविद्यालय की ओर से कई दौरे भी करती हैं. छात्रों को जैविक खेती के बारे में बताया. वह कहती हैं, 'उर्वरक और कीटनाशकों को लेकर मेरी अपनी नापसंद और डर है. जब कृषि में रसायनों का बहुत अधिक उपयोग होने लगा, तब भी मैंने जैविक खेती जैसी प्राकृतिक पद्धति को अपनाया. मैंने उन तरीकों का पालन किया जो मैंने अपने पिता के खेत में सीखे थे. रसायनों वाली फसलें हमारी मिट्टी और हमारे ग्राहकों के लिए हानिकारक हैं. उन्होंने केवीके के तहत गांव की महिला किसानों के लिए पहला 'स्वयं सहायता समूह' भी खोला.

कॉफी या चाय नहीं पीतीं

6 फीट लंबी, मजबूत आवाज और मजबूत इरादों वाली पप्पाम्मल कॉफी या चाय नहीं पीती हैं. सिर्फ गर्म पानी ही पीती हैं. पौष्टिक आहार करती हैं. वह टूथपेस्ट की जगह नीम के दातून से अपने दांत साफ करती हैं. आज भी वह नहाने के साबुन की जगह हाथ धोने के लिए मिट्टी और राख का इस्तेमाल करती हैं. वह ग्रामीणों में जागरूकता भी फैला रही हैं.

अधिकतर वरिष्ठ नागरिक पेंशन और अर्जित ब्याज आय पर निर्भर रहते हैं. ऐसे कई मामले मिलते हैं, जब लोग अपना निवेश या जमा किया धन खो बैठते हैं. यह इसलिए होता है क्योंकि उन्होंने धन निवेश/जमा करने से पूर्व आधारभूत सावधानियों पर ध्यान नहीं दिया. वित्तीय बाजार में पैसा लगाना अत्यन्त जोखिमभरा कदम हो सकता है. शेयर बाजार में जोड़-तोड़, कीमत-खनखनाहट, सर्कुलर ट्रेडिंग, इनसाइडर ट्रेडिंग जैसी प्रवृतियां वर्षों से चल रही हैं, जिन पर अभी तक कोई कारगर उपाय नहीं हुआ है. हां, आधे-अधूरे उपाय जरूर होते रहे हैं पर इनसे निवेशकों को बाजार में विश्वास और स्थिरता नहीं मिल पाती है. सरकार के लिए जरूरी है कि वह वित्तीय बाजार को अधिक नियमबद्ध, पारदर्शी, सरल और विश्वसनीय बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाए. वरिष्ठ नागरिक के रूप में हमें भी अपने धन को निवेश करने से पूर्व सावधानियां बरतनी चाहिए.

सावधानी से करें निवेश

एक ही जगह न इन्वेस्ट करें

अंग्रेजी कहावत 'Don't put all eggs in one basket' धन निवेश करने के लिए हमे सचेत करती है कि हमें एक ही योजना अथवा एक ही बैंक में धन निवेश या जमा करने के बजाय विभिन्न योजनाओं और बैंकों में धन निवेश या जमा करना चाहिए. हमें यह भी जानकारी ले लेनी चाहिए कि अर्जित आय (ब्याज) कर-मुक्त है या उस पर आयकर लगेगा.

म्युचुअल फंड

यदि आप शेयर बाजार के नियमों और उतार-चढ़ाव के बारे में अधिक नहीं जानते हैं तो बेहतर है कि आप शेयर बाजार में सीधे निवेश करने से बचें. यदि आप थोड़ा-बहुत जोखिम ले सकते हैं तो म्युचुअल फंड (Mutual fund) की योजनाओं में निवेश करना लाभदायक हो सकता है, क्योंकि एक निश्चित अवधि के पश्चात होने वाली आय कर-मुक्त हो सकती है. म्युचुअल फंड की योजनाओं की जानकारी के लिए आपको अच्छी और पुरानी उन योजनाओं का चयन करना चाहिए, जिनके परिणाम अच्छे रहे हैं. इसके लिए आपको निष्पादन-विश्लेषण (performance analysis) करना चाहिए.

सुरक्षित माध्यम

बैंकों (विशेषकर राष्ट्रीयकृत बैंक) और पोस्ट-ऑफिस की सावधिक जमा योजनाओं में धन जमा करना एक सुरक्षित माध्यम है. हमे धन जमा करने से पहले मिलने वाले ब्याज, अवधि, कर-प्रभावों आदि पर ध्यान देना चाहिए. अनेक वरिष्ठ नागरिक अपनी समस्त धनराशि कोआपरेटिव बैंक की किसी आकर्षक जमा-योजना में जमा कर देते हैं और ऐसे अनेक मामले देखने को मिले हैं, जब कोआपरेटिव बैंक के फेल जाने पर समस्त जमा धन डूब जाता है. अतः कोआपरेटिव बैंक में धन जमा करते वक्त अत्यन्त सतर्कता की जरूरत है.

नॉमिनेशन अवश्य करें

जब भी आप अपना धन किसी भी योजना में निवेश करें या किसी बैंक में जमा कराएं तो नॉमिनेशन अवश्य करें, ताकि आपकी असमय मृत्यु हो जाने की स्थिति में आपके नामांकित व्यक्ति को आसानी से आपका जमा धन मिल सके.

कोविड से रिकवरी के बाद भी फेफड़े पूरी तरह से पहले की तरह स्वस्थ नहीं हुए हैं. अभी भी ये रिकवर हो रहे हैं. इन्हें देखभाल की जरूरत है. सर्दियां शुरू हो चुकी हैं. ऐसे में बुजुर्गों को खासतौर पर फेफड़ों का ख्याल रखने की जरूरत है.

सर्दियों में फेफड़ों को दीजिए सुरक्षा कवच

हेल्थ जोन

खुले में एक्सरसाइज से बचें

एक्सपर्ट कहते हैं, सर्दियों में सुबह और शाम को पॉल्यूशन का लेवल अधिक होता है इसलिए खुले में एक्सरसाइज करने की जगह कमरे में ही करें तो बेहतर है. ध्यान रखें कि कमरे का वेंटिलेशन बेहतर रहे. सर्दियों में खुले में एक्सरसाइज करना दिल के लिए भी नुकसानदेह हो सकता है. एक्सरसाइज के तुरंत बाद घर से बाहर न निकलें, इससे शरीर पर बुरा असर पड़ सकता है.

स्पाइरोमेट्री का इस्तेमाल करें

स्पाइरोमेट्री से फेफड़ों को मजबूत करें. यह फेफड़ों की एक्सरसाइज है. अगर आपको बार-बार सांस फूलने की दिक्कत का सामना करना पड़ता है तो स्पाइरोमेट्री का इस्तेमाल करना बेहतर विकल्प है. स्पाइरोमेट्री एक डिवाइस की तरह होती है, जिसमें पाइप के जरिए फूंक मारनी होती है. इससे फेफड़ों के काम करने की क्षमता बढ़ती है.

मास्क जरूर लगाएं

ऐसे बुजुर्ग मरीज जो कोविड के बाद अभी भी फेफड़ों से जुड़ी दिक्कतों से जूझ रहे हैं, वो बाहर निकलने पर मास्क जरूर लगाएं. यह कई तरह से मरीजों की मदद करता है. पहला, यह धुएं और पॉल्युशन के कारण होने हवा में मौजूद बारीक कणों को शरीर में पहुंचने से रोकता है. दूसरा, यह संक्रमण का खतरा भी घटाता है.

पल्स ऑक्सीमीटर से चेक करें लेवल

एक्सपर्ट कहते हैं, सर्दियों में मौसम में ऑक्सीजन का लेवल जांचना बेहद जरूरी है क्योंकि ठंड के कारण सांस की नलियां सिकुड़ जाती हैं. शरीर में ऑक्सीजन का लेवल कितना है, यह खतरनाक लेवल पर है या सामान्य से थोड़ा कम या ज्यादा, इसकी सटीक जानकारी पल्स ऑक्सीमीटर से मिलती है. हर दिन एक बार पल्स ऑक्सीमीटर से अपने ऑक्सीजन लेवल को चेक करें.

गहरी सांस वाले व्यायाम करें

फेफड़ों को मजबूत करने के लिए जितना स्पायरोमेट्री काम करती है, उतने ही बेहतर तरीके से गहरी सांस वाले व्यायाम असर डालते हैं. इसके लिए प्राणायाम और अनुलोम-विलोम करें. प्राणायाम फेफड़ों की क्षमता को बढ़ाने का काम करता है. ध्यान रखें कि हमेशा खाली पेट की प्राणायाम करें. रोजाना कम से कम 10 मिनट प्राणायाम करें. वहीं, अनुलोम-विलोम शरीर में ऑक्सीजन के साथ ब्लड के सर्कुलेशन को बढ़ावा देने का काम करता है.

hillviewsamachar@gmail.com

हिलव्यू समाचार

08

जयपुर >> रविवार, 21 नवम्बर, 2021

एक नजर

कोरोना से मौत के बाद सीएम ने मांगी बूस्टर डोज

गहलोत बोले... पीएम मोदी को पत्र लिखेंगे, अब तीसरी डोज की भी लोगों को ज़रूरत

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजस्थान में तीन महीने बाद कोरोना से मौत का केस आने के बाद शुक्रवार को सरकार ने तत्काल मीटिंग बुलाई। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने आज कोर ग्रुप के साथ कोरोना के हालात और रोकथाम पर रिव्यू बैठक की। गहलोत ने कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए कोरोना वैक्सीन की बूस्टर डोज लगाने की संभावनाएं तलाशने और प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखने का फैसला किया है। बैठक में अफसरों से जिलों में सोशल डिस्टेंसिंग की पालना करवाने पर जोर देने को कहा है। जीनोम सीक्वेंसिंग और सीरो सर्वे करवाने के निर्देश दिए हैं।

समीक्षा बैठक के बाद मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा, हमने फैसला किया है कि आज ही प्रधानमंत्री को लिखेंगे कि कोरोना वैक्सीन की तीसरी बूस्टर डोज लगाने की अनुमति दें। सालभर बाद अब तीसरी डोज की आवश्यकता है ताकि तीसरी लहर नहीं आए। पीएम को लिखेंगे कि बूस्टर डोज पर विचार करें और और इसकी मंजूरी दें। कई देशों में बूस्टर डोज लगाना शुरू कर दिया है। हमारे यहां भी कई लोगों को अब साल भर हो गया, इसलिए बूस्टर डोज लगाना चाहिए। केंद्र इसकी व्यवस्था करें।

गहलोत ने कहा, कोविड पर हमने आज समीक्षा बैठक करके डॉक्टरों की राय ली है। यूरोप और रूस में भयंकर रूप से कोरोना फैल रहा है। जर्मनी, रूस में बेड तक नहीं मिल रहे हैं। डब्ल्यूएचओ ने कहा है कि कोरोना की वजह से यूरोप में 5 लाख लोग मर सकते हैं। यह भी एक धारणा है कि कोरोना जब यूरोप में आता है तो दो महीने बाद एशिया में आता है। हमारा देश भी उसी में है। कोरोना की हमारे यहां भी संख्या बढ़ी है, इसलिए हमने रिव्यू किया है।

तीसरी लहर राजस्थान में नहीं आनी चाहिए: सीएम ने कहा कि स्कूलों में कोरोना केस आना खतरनाक है। हम इस पर नजर रखे हुए हैं। तीसरी लहर राजस्थान में आनी ही नहीं चाहिए, यह हम सबका सोचना है। इसके लिए सबको सावधानियां रखनी होंगी। कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करना होगा।

महीने भर में आधी हो सकती है लीगल बजरी की रेट

सरकार ने खनन पट्टों की LOI वैलिडिटी 13 महीने बढ़ाई, घर बनाना होगा सस्ता, कंस्ट्रक्शन और रोजगार बढ़ेंगे

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। प्रदेश में पिछले 4 साल से बंद नदियों से लीगल बजरी खनन ज्यादातर जगह अगले 1 महीने में फिर से शुरू हो जाएगा। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद राज्य सरकार ने लीगल माइनिंग की तैयारियां शुरू कर दी हैं। इसका सबसे बड़ा फायदा आम लोगों को यह होगा कि नदियों से अच्छी क्वालिटी की बजरी पहले से वाजिब रेट पर कंस्ट्रक्शन के लिए मिल सकेगी। इस काम से जुड़े हजारों लोगों को रोजगार मिलेगा। कंस्ट्रक्शन कॉस्ट कम होने से मकान और फ्लैट सस्ते होंगे। बजरी माफिया खत्म होगा। सरकार का सालाना रेवेन्यू कलेक्शन 500 करोड़ रुपए तक बढ़ेगा।

लीगल खनन से उम्मीद है बजरी ट्रक के दाम घटकर 30 से 40 हजार रुपए तक हो सकते हैं। रोक से पहले बजरी ट्रक 13 से 18 हजार रुपए का मिलता था। बाद में अवैध बजरी ट्रक 80 से 90 हजार रुपए तक बिकने लगा। टोंक, सवाईमाधोपुर, भीलवाड़ा, राजसमंद, सिरोही, जालोर, जयपुर समेत कई जिलों में बजरी का अवैध ट्रांसपोर्टेशन रुकेगा। उदाहरण के तौर पर 100 वर्गगज या 4-5 कमरे, किचन लैट-बाथ कंस्ट्रक्शन में करीब एक से डेढ़ लाख रुपए तक फायदा होगा।

खनन पट्टों की LOI का वैलिडिटी पीरियड 13 महीने बढ़ाया: प्रदेश सरकार बजरी के पुराने खनन पट्टों से फिर माइनिंग करवाने जा रही है। ऐसा इसलिए किया जा रहा है ताकि पुराने माइंस लीज होल्डर्स से कानूनी विवाद पैदा न हो। बजरी खनन बन्द होने से हुए नुकसान की भरपाई की जा सके। साथ ही पिछले करीब 4 साल से बन्द लीगल बजरी खनन को स्पीड के साथ फिर से चालू करवाया जा सके। माइंस डिपार्टमेंट ने खनन पट्टों के मंशा पत्रों (Letter of intent) का वैलिडिटी पीरियड 13 महीने से बढ़ाकर 68 महीने कर दिया है। सरकार ने राजस्थान अप्रधान खनिज रियायत नियम 2017 के नियम 5(4) में संशोधन किया है। अब देवली, राजसमंद, नाथद्वारा समेत कई जिलों में पुराने बजरी के मंशा पत्र वैलिड हो जाएंगे। करीब पौने 5 साल पहले जारी मंशा पत्रों की वैलिडिटी नवम्बर 2022 तक बढ़ जाएगी। प्रदेश सरकार ने केन्द्रीय वन, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को 12 नवम्बर को लैटर लिखकर जल्द पर्यावरण क्लीयरेंस जारी करने की मांग की है।

82 बड़े लीज होल्डर्स माइनिंग की तैयारी में जुटे: बजरी के 82 बड़े लीज होल्डर्स हैं,जो माइनिंग की तैयारी में जुटे हैं। माइनिंग डिपार्टमेंट के एसीएस डॉ सुबोध अग्रवाल ने जिला कलेक्टर्स, एसपी, कमिश्नर्स को सुप्रीम कोर्ट के आदेश की पालना करवाने को कहा है। नवम्बर महीने में ही ड्रोन से माइंस का डिस्ट्रिक्ट सर्वे करवाकर रिपोर्ट भी पेश करनी है। हालांकि पुराने बजरी लीज होल्डर्स अपने बाकी रहे पीरियड तक बजरी माइनिंग कर सकेंगे। पीरियड खत्म होने पर सरकार नए सिरे से ऑनलाइन नीलामी करेगी।जिससे सरकार को बड़ा रेवेन्यू भी मिलेगा।

अब बजरी की लीगल माइनिंग,स्टोरेज और ट्रांसपोर्टेशन: एसीएस माइंस डॉ. सुबोध अग्रवाल ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेशों की पालना की जा रही है। बजरी का अवैध खनन होने से आम लोग प्रभावित हो रहे थे। सुप्रीम कोर्ट के फैसले से अब प्रदेश में बजरी की लीगल माइनिंग, स्टोरेज और ट्रांसपोर्टेशन हो सकेगा। जिससे प्रदेश के लोगों को बड़ी राहत मिलने का रास्ता खुल गया है। इसके लिए विभाग ने एडिशनल डायरेक्टर बीएस सोढ़ा को ऑफिसर इंचार्ज बनाते हुए कॉर्डिनेशन और इम्प्लीमेंटेशन कराने के निर्देश दिए हैं।

वैध माइनिंग से मिलेगी सस्ती और बढ़िया बजरी: ऑल राजस्थान बजरी ट्रक वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष और सुप्रीम कोर्ट में याचिकाकर्ता नवीन शर्मा ने दैनिक भास्कर को बताया कि वो प्रदेश में लीगल माइनिंग चाहते हैं। ओवर लोडिंग-अवैध बजरी माफिया का तांडव खत्म कराने के लिए सुप्रीम कोर्ट गए। लेकिन कोर्ट के आदेश की पालना नहीं होने पर कन्टेम्प्ट पिटिशन लगाई। खुशी है राजस्थान सरकार अब सुप्रीम कोर्ट के आदेश का पालन करवा रही है। जिसका उन्होंने स्वागत किया। उन्होंने कहा निश्चित ही अब राजस्थान की जनता को अच्छी क्वालिटी की बजरी वाजिब दाम पर मिलेगी। बजरी माफिया भी खत्म होगा।

प्रदेश में रोजाना करीब 8 से 10 हजार ट्रक बजरी की जरूरत: बजरी कारोबारियों का अनुमान है कि प्रदेश में रोजाना करीब 8 हजार से 10 हजार बजरी ट्रक की जरूरत है। रोक से पहले जयपुर जिले में ही रोजाना 1200 से 1500 बजरी ट्रकों की खपत हो जाती थी।

बजरी का रेवेन्यू: सूत्रों के मुताबिक राज्य सरकार को बजरी से सालाना करीब 400 से 450 करोड़ रुपए तक का रेवेन्यू मिल सकता है। साल 2013 में राजस्थान सरकार ने 82 बड़ी लीज के लिए टेंडर मांगे थे। जिनका रिजर्व प्राइस 51 करोड़ रुपए रखा। तब लीज लेने वालों ने ग्रुप बनाकर 467 करोड़ में टेंडर अपने काम छुड़वा लिया था।

जीवन रेखा सुपरस्पेशियलिटी हॉस्पिटल में राज्य चिकित्सा मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग ने किया प्रीमियम रूम फ्लोर का उद्घाटन

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। बेहतरीन चिकित्सा सेवाओं के साथ अब शहर के जीवन रेखा सुपरस्पेशियलिटी हॉस्पिटल में प्रीमियम रूम्स की सुविधाएं भी उपलब्ध होंगी। शुक्रवार को राज्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग ने अस्पताल के प्रीमियम रूम फ्लोर का फीता काटकर उद्घाटन किया। इस फ्लोर में ट्रीटमेंट के साथ प्रीमियम सेवाएं चाहने वाले मरीजों के लिए सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। जीवन रेखा हॉस्पिटल के सीईओ रंजीत ने बताया प्रीमियम रूम फ्लोर में 24 रूम्स हैं जिसमें दो सुइट, 14 डीलक्स रूम, तीन ट्विन और चार ट्रिपल शेयरिंग रूम्स उपलब्ध हैं। इन रूम्स में पेशेंट्स के साथ उनके गेस्ट के ठहरने के लिए भी सभी सुविधाएं होंगी। इस मौके पर चिकित्सा राज्य मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग ने कहा कि कोरोनाकाल में जीवन रेखा हॉस्पिटल ने राज्य सरकार के प्रयासों को अच्छे से पहचाना व मरीजों की सेवा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के निरोगी राजस्थान के विजन पर भी अस्पताल बेहतर काम कर रहा है। चिकित्सा राज्य मंत्री ने अस्पताल के सभी विशेषज्ञों से मुलाकात की और अन्य सुविधाओं के बारे में जानकारी भी ली।

जयपुर में भारत के पहले वर्ल्ड हेल्थ एंड वेलनेस फेस्टिवल-21 का आयोजन दिसंबर में

वर्ल्ड हेल्थ एंड वेलनेस फेस्टिवल में एचएच आचार्य डॉ. लोकेश मुनि, बी के शिवानी, अन्नू कपूर, पद्मिनी कोल्हापुरी और डॉ. मिकी मेहता बतौर प्रमुख वक्ता शामिल होंगे

नई दिल्ली। भारत का पहला और बहु प्रतीक्षित हेल्थ एंड वेलनेस फेस्टिवल देश में अपना परचम लहराने के लिए पूरी तरह तैयार है। यह वर्ल्ड हे ल्थ एंड वेलनेस फेस्टिवल कोविड-19 के बाद, भारत में स्वास्थ्य और वित्तीय स्थितियों के भविष्य के बारे में बात करेगा । यह फेस्टिवल जयपुर में 17 दिसंबर से 19 दिसंबर, 2021 तक आयोजित किया जायेगा और साथ ही साथ इसके वर्चुअल सेशन लाइव प्रसारित होंगे ।

इस अवसर पर पं. मुकेश भारद्वाज, नरिशंत शर्मा और मुकेश मिश्रा, सह-संस्थापक, WHWF ने वक्ताओं की पहली सूची का अनावरण किया है, जिसे आज जारी किया गया है।

इस फेस्टिवल के प्रमुख वक्ताओं के तौर पर पहली लिस्ट में शामिल दिग्गजों में से एक समाज सुधारक और आध्यात्मिक गुरु और अहिंसा विश्व भारती के संस्थापक, एचएच आचार्य डॉ. लोकेश मुनि हैं। आचार्य मुनि एक बहुमुखी विचारक, लेखक, कवि और समाज सुधारक हैं और एक योग ध्यान शिक्षक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और संरक्षक के तौर पर राष्ट्रीय चरित्र निर्माण में लगातार प्रयास कर रहे हैं। अध्यात्मिक संस्था प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरिय विश्वविधयालय की शिक्षिका राजयोगिनी शिवानी बहन को घर घर मे आज पहचाना जाता है , शिवानी जी ने जीवन मूल्यों, आत्म-प्रबंधन, आंतरिक शक्तियों, रिश्तों में सामंजस्य, कर्म के कानून, उपचार, आत्म-सशक्तिकरण, आत्म-अनुशासन, आध्यात्मिकता और जीवन जीने की कला पर कई एपिसोड दर्ज किए हैं। इनके अलावा, अन्नू कपूर हैं जो कि एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी भारतीय अभिनेता, गायक, निर्देशक, रेडियो जॉकी और टेलीविजन प्रस्तुतकर्त्ता हैं, जिन्होंने सौ से अधिक फिल्मों के साथ-साथ टेलीविजन सीरीज में भी काम किया है। पद्मिनी कोल्हापुरी जी जो कि एक अनुभवी अभिनेत्री और गायिका हैं, जो मुख्य रूप से हिंदी फिल्मों में काम करती हैं । डॉ. मिकी मेहता, जो देश के कई नाम चीन हस्तियों , बॉलीवुड के बड़े सुपर स्टार्स और सुपर मॉडलों के ग्लोबल लीडिंग होलिस्टिक हेल्थ गुरु और लाइफ कोच हैं । आदित्य बिड़ला हाउसिंग फाइनेंस के सीईओ नेत्रपाल सिंह जी जो कि मॉर्गेज उद्योग के दिग्गज हैं । श्री अनिल सिंघवी, प्रबंध संपादक, ज़ी बिजनेस और जाने-माने वित्तीय विशेषज्ञ, डॉ विंसेंट, विश्व प्रसिद्ध सलाहकार जनरल/ हेपेटोबाइलरी और पेंक्रियाज सर्जन, रॉयल कॉलेज ऑफ लन्दन , इंग्लैंड जैसे जाने माने लोगों के नाम भी इस लिस्ट में शामिल हैं।

पहली लिस्ट में डॉ. प्रमोद त्रिपाठी जो कि फ्रीडम फ्रॉम डायबिटीज़ के संस्थापक हैं और भारत को डायबिटीज़ से मुक्त करवाने वाले अग्रदूत के रूप में जाने जाते हैं और इनके अलावा इस सूची में संयुक्त राष्ट्र ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया की एक्जिक्यूटिव डायरेक्टर सुश्री शबनम सिद्दीकी का नाम भी शामिल हैं जो रणनीतिक हस्तक्षेप तैयार करने और उसे लागू करने में माहिर हैं ।

जयपुर के एसएमएस स्टेडियम वेलोड्रोम पर दिसंबर में होगी नेशनल लेवल की साइकिलिंग चैंपियनशिप

जयपुर। साइकिलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया की 73 वीं सीनियर 50वीं जूनियर और 36 वीं सब जूनियर नेशनल ट्रैक साइकिलिंग चैंपियनशिप की मेजबानी का अवसर इस बार जयपुर (Rajasthan) को मिला है। यह चैंपियनशिप 24 से 28 दिसंबर 2021 तक जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम स्थित साइकलिंग वेलोड्रोम पर होगी इसमें देशभर के 700 से ज्यादा साइकिलिस्ट अपने खेल का जलवा दिखाएंगे। इसमें करीब 200 से अधिक महिला साइकिलिस्ट भी शामिल होने जा रही है। साइकलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया ने इसके लिए राजस्थान रोड राइडर्स से एसोसिएशन किया है। चैंपियनशिप में शामिल होने के लिए एंट्रीज 15 दिसंबर से खुलेंगे। खिलाड़ियों के अकोमोडेशन की सारी व्यवस्था 22 से 28 तारीख तक जयपुर में ही की जाएगी।

नेशनल ट्रैक चैंपियनशिप का आयोजन कराने वाली कमेटी के प्रेसिडेंट डॉ.जी एल शर्मा और आयोजन सचिव बृजेंद्र सिंह ने बताया कि साइकिलिंग को बढ़ावा देने और इंटरनेशनल लेवल के साइकिलिंग खिलाड़ी तैयार करने के लिए इस चैंपियनशिप का आयोजन किया जाता है। साइकिल फेडरेशन ऑफ इंडिया ने इस बार राजस्थान में राजस्थान रोड राइडर्स के सहयोग से इस आयोजन को कराने का डिसीजन किया है। नेशनल लेवल की यह चैंपियनशिप राजस्थान दूसरी बार होने जा रही है। इससे राजस्थान में भी साइकिलिंग के क्षेत्र में खेल के प्रति युवाओं मैं उत्साह बढ़ेगा। इस प्रतियोगिता में कुछ सरकारी विभागों की साइकिलिस्ट भी शामिल होंगे जिनमें रेलवेज, बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स के अलावा कई विभागों के साइकिलिस्ट भी शामिल होंगे।

वर्ल्ड डायबिटीज डे पर आयोजित हुई स्वास्थ्य परिचर्चा

संयमित दिनचर्या से संभव डायबिटीज पर जीत

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। देश में 7.5 करोड़ लोग डायबिटीज से पीड़ित हैं और चीन के बाद इसके सबसे ज्यादा मरीज भारत में हैं। आज का समय लाइफ स्टाइल डिसऑर्डर का माना जाता है और उसमें सबसे अधिक डायबिटीज के मामले ही हैं। डायबिटीज सभी बीमारियों का जोखिम कई गुना बढ़ा देता है। पिछले कुछ समय से इसे लेकर काफी जागरुकता तो आई है लेकिन उसे लागू नहीं कर पाए हैं। वर्ल्ड डायबिटीज डे के मौके पर इटर्नल हॉस्पिटल में आयोजित हुई स्वास्थ्य परिचर्चा 'डायबिटीज मैनेजमेंट में नई तकनीकें' में एक्सपर्ट्स ने यह बात कही।

परिचर्चा के मॉडरेटर डॉ. आलोक माथुर ने बताया कि हॉस्पिटल एंडोक्राइनोलॉजी विभाग के हैड ऑफ द डिपार्टमेंट डायरेक्टर डॉ. सैलेश लोढ़ा, सीनियर इंटरनल मेडिसिन एक्सपर्ट डॉ. जेबी गुप्ता, एंडोक्राइनोलॉजिस्ट डॉ. दीपक गुप्ता ने डायबिटीज से जुड़ी जानकारी दी। कार्यक्रम में शामिल हुए लोगों ने एक्सपर्ट्स से सवाल-जवाब किये और अंत में उनके लिए क्विज सेशन भी आयोजित किया गया जिसमें सही जवाब देने वालों को पुरस्कृत किया गया।

डायबिटीज के डायग्नोज के लिए लैब टेस्ट कराएं: डॉ. सैलेश लोढ़ा ने बताया कि कैंप में डायबिटीज देखने के लिए जो मीटर का इस्तेमाल होता है, इसे डायग्नोज नहीं मानना चाहिए क्योंकि यह डायबिटीज की मॉनिटरिंग के लिए होता है। डायबिटीज के उचित डायग्नोज के लिए लैब में टेस्ट करवाना चाहिए। उन्होंने बताया कि इंसुलिन की सलाह को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। अगर किसी बच्चे को डायबिटीज होती है और उसे इंसुलिन लगाने की सलाह दी जाती है तो ज्यादातर परिजन इसे टालते हैं। जबकि हमारे देश में 100 में से 30 टाइप-1 से ग्रसित बच्चे इंसुलिन समय पर न लेने के कारण सीधे आईसीयू में भर्ती कराने पड़ते हैं।

मात-पिता को डायबिटीज तो बच्चे में 50 प्रतिशत संभावना: डॉ. जेबी गुप्ता ने बताया कि पहली बार डायबिटीज डायग्नोज होने पर जरूरी नहीं कि आनुवांशिक कारणों से ही यह बीमारी होती है। अगर किसी के माता-पिता दोनों को डायबिटीज है तो उसे डायबिटीज होने की संभावना 50 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। डॉ. गुप्ता ने बताया कि अब इंसुलिन इंफ्यूजन पंप आ गए हैं जिसमें सेंसर लगे होते हैं और वह अपने आप शरीर में शुगर लेवल जांचकर उस हिसाब से इंसुलिन इंजेक्ट करते हैं। वहीं अब नेजल स्प्रे, टैबलेट के रूप में भी इंसुलिन लेने की तकनीक पर ट्रायल चल रहे हैं और जल्द ही इस्तेमाल के लिए आ जाएंगे। डॉ. दीपक गुप्ता ने बताया कि डायबिटीज चार प्रकार, टाइप 1, 2, 3, 4 की होती है। इनमें टाइप-1 बच्चों को जन्मजात होती है। वहीं टाइप-2 सामान्यतः लोगों में होती है और टाइप-3 डायबिटीज काफी कम देखने को मिलती है। यह हार्मोनल असंतुलन, ट्यूमर जैसे कारणों से होती है। टाइप-4 डायबिटीज ज्यादातर प्रेग्नेंट महिलाओं में देखने को मिलती है। डायबिटीज से माइक्रोवस्कुलर डिजीज भी बढ़ जाती हैं जिससे पैरों में झनझनाहट, आंखे या किडनी भी प्रभावित हो सकती है। वहीं स्ट्रोक और हार्ट अटैक, गैंगरीन में भी डायबिटीज एक बड़ा कारण होता है।

उभरते शैक्षणिक नवाचार पर कार्यशाला का आयोजन

जयपुर। गत शनिवार को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में भारतीय पाठ्यक्रम में उभरते शैक्षणिक नवाचार पर ज्ञानविहार विद्यालय में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। डायरेक्टर कनिष्क शर्मा तथा प्रिंसिपल राकेश उपाध्याय ने सरस्वती प्रतिमा पर पुष्पार्पित कर कार्यशाला का आगाज़ किया। मीडिया प्रभारी रेनू शर्मा 'शब्दमुखर' ने बताया कि कार्यशाला में रिसोर्स पर्सन कनिष्क शर्मा,प्रिंसिपल राकेश उपाध्याय ने व रेनू शर्मा स्वयं ने भी प्रशिक्षण दिया। इस कार्यशाला में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर प्रकाश डाला गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति एवं शाश्वत मूल्य को सतत बनाए रखते हुए 21वीं शताब्दी की तकनीकी में आवश्यकतानुसार परिवर्तनों को समावेशित करना है। शंभू सिंह के अनुसार जयपुर शहर के प्रतिष्ठित 20 सीबीएसई विद्यालय के शिक्षकों ने भाग लिया।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, एवं मुद्रक **रिज़वान एजाज़ी के लिए** अम्बर ऑफसेट प्राइवेट लिमिटेड, डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जेएलएन मार्ग, जयपुर में मुद्रित एवं महिमा क्लासिक 601, बी-84, रमन मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित।
संपादक : शालिनी श्रीवास्तव, फोन : 0141-2620340 मो.: 9460678701, 7976561127 (21 जून 2014 से निरन्तर प्रकाशित) **hillviewsamachar@gmail.com**